ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

सितम्बर, 2015

राजभवन में राजर्षि

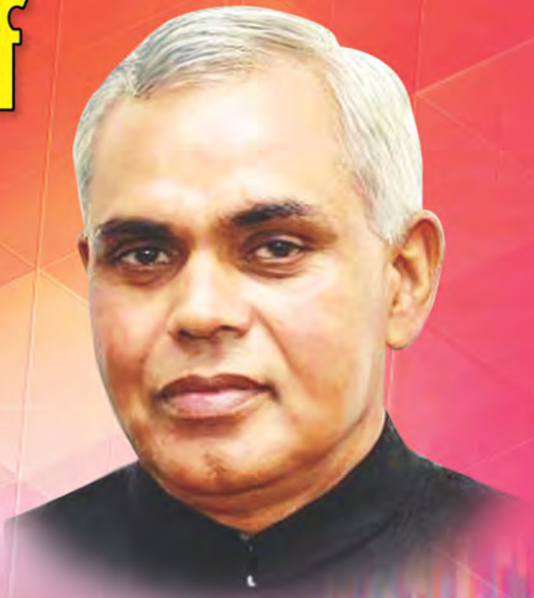

- प्रबन्ध शास्त्री के रूप में श्रीकृष्ण
- अटल है कर्मफल व्यवस्था
- भारतीय संविधान और हिन्दी
- स्वास्थ्य रक्षक आंवला

₹10

संस्मृतियाँ : स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक

स्वामी गोरक्षानन्द जी , श्री सूरजभान काजल, डॉ धर्मदेव विद्यार्थी व अन्य के साथ
पुस्तक विमोचन व स्वामी वेदरक्षानन्द जी के साथ यज्ञ। यजमान डॉ. शिवप्रकाश।

महाशय हरद्वारी लाल आर्य, हनुमान आर्य,
लक्ष्मण वर्मा आदि सम्बन्धियों के साथ रोहतक में

संस्कारों का प्रत्यारोपण :
पौत्री सुमेधा के साथ यज्ञ के पश्चात्।

धर्मपत्नी श्रीमती रोशनी देवी सहित
पुत्र व पुत्रवधु को आशीर्वाद देते हुए।

भजनोपदेश की एक शैली
आर्यसमाज पनिहार चक के उत्सव में 1991 ई. में ।

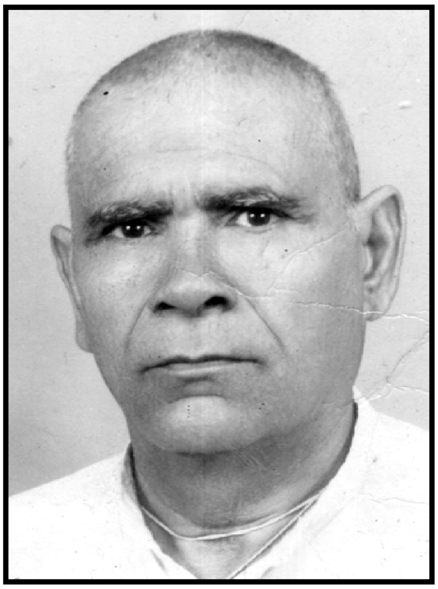

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित

(चलभाष 09416253826)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर

कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१२०.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

शान्तिधर्मी

सितम्बर, २०१५ ई०

वर्ष : १७ अंक : ८ भाद्रपद २०७२ विक्रमी

सृष्टि संवत्-१९६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १९२

क्या? कहाँ?....

आलेख

श्रद्धांजलियाँ/संस्मरण	६
राजभवन में राजर्षि	८
हर वर्ग को सुख पहुंचाना ही ध्येय (भेंटवार्ता)	११
अटल है कर्म फल व्यवस्था	१२
प्रबंध शास्त्री के रूप में श्रीकृष्ण	१४
वेद ज्योति : स्वाध्याय	१६
कर्ण कुंती पुत्र कैसे?	१८
हमारा संविधान और राजभाषा हिन्दी	२०
मेस्मेरिज्म केवल एक धोखा है (अंधविश्वास)	२२
कहाँ सुरक्षित हैं बेटियाँ	२३
स्वास्थ्य रक्षक आंवला	२४
सज्जनता ही देश की शक्ति है (अन्ततः)	३४

कविताएँ : १९, २७

कहानी : अंधानुकरण, जंग अपनों से, बिना अकल के नकल २७

स्थायी स्तम्भ : आपकी सम्मतियाँ-५, बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८, समाचार-सूचनाएँ,

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

जब उत्तम उत्तम उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। और जब उत्तम उपदेशाक ओर श्रोता नहीं रहते तब अंधपरम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अंधपरम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है। –**महर्षि दयानन्द** (सत्यार्थ प्रकाश)

।। शान्ति प्रवाह ।।

❒सहदेव 'समर्पित'

१९ सितम्बर को गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली में ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा आर्य उपदेशकों, भजनोपदेशकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। ठाकुर विक्रमसिंह जी का दृष्टिकोण प्रणम्य है। अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ उन्होंने एक उपदेशक के रूप में ही किया। उन्होंने उपदेशकों के जीवन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया। फिर उन्होंने उपदेशक का कार्य छोड़ दिया। अब ७२ वर्ष की आयु में अपने संवेदनशील हृदय में संजोये हुए संकल्प को इस रूप में चरितार्थ किया कि उन्होंने भजनोपदेशकों सहित उपदेशकों, साधु संन्यासियों को दिल खोलकर आर्थिक सहयोग सहित सम्मानित किया। उनका शुभ संकल्प उनकी सन्तान में भी प्रत्यारोपित हुआ कि आर्थिक और वैचारिक दृष्टि से समृद्ध उनके सुपुत्रों ने अपने पिता के ७२ वें जन्म दिवस पर उन्हें ७२ लाख रूपये की राशि इस रूप में व्यय करने की सहर्ष सहमति दी। मैं श्रद्धेय श्री धर्मवीर शास्त्री जी का आभारी हूँ कि उनकी प्रेरणा से मुझे भी ठाकुर विक्रमसिंह जी जैसे प्रणम्य व्यक्तित्त्व के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज के भजनोपदेशकों के जीवन में आने वाली कठिनाईयों की आज के युग में केवल कल्पना ही की जा सकती है। जिन्होंने इन्हें अनुभव किया है वे ही इनके बारे मे जान सकते हैं। आर्य भजनोपदेशक की सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता उसकी सबसे बड़ी शक्ति होती है। और यही आर्थिक रूप से पिछड़ने का कारण भी होती है। वे सांग, रामलीला, रासलीला या नाच गाने के कार्यक्रमों में हारमोनियम नहीं बजा सकते। वे सरकारी कार्यक्रमों में भाग लेकर शराब, अण्डे और मछली पालन के 'लाभों' का वर्णन नहीं कर सके। जिन्होंने इस सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता का पालन किया वे आर्थिक अभावों से ग्रस्त रहे। वे अपने भजनों को नहीं छपवा सके। बहुतों का अन्तिम समय अत्यंत दयनीय अवस्था में गुजरा। बहुत से गुमनाम मृत्यु को प्राप्त हुए। उनके मरने पर भी अखबारों में चर्चा नहीं हुई, जबकि उनके दम पर नेता बने लोगों के समाचारों से अखबार रंगे रहे।

आज पाठकों का यह बात विचित्र लग सकती है, जबकि भजनोपदेशक ५ अंकों की राशि तय करके तिथियाँ देते हैं। इसका एक पक्ष तो यह है कि क्या भजनोपदेशकों की पीढ़ियाँ की पीढ़ियाँ टोटा पीटने के लिए अभिशप्त हैं? उनसे भी कम योग्यता के चरित्रशून्य लोग जो केवल फूहड़ रागनियाँ और चुटकुले सुनाते हैं, वे लोक गायक की उपधियाँ पा जाते हैं और उनकी फीस भी दस अंकों में होती है। दूसरा पक्ष यह है कि यह सब बने बनाए, सजे सजाए मंचों पर ही संभव हो पाता है। नए मंच तैयार नहीं हो रहे हैं। शांतिधर्मी के सम्पादक स्व० पं० चन्द्रभानु आर्य जी ने एक बार इसी पृष्ठ पर इस पीड़ा को उंडेला था– 'ग्राम में आर्यसमाज का मंच बहुत बहुत पुरुषार्थ और तप से तैयार हुआ था, आज वह सूना पड़ा है।' जिन्होंने जमीन तैयार की, जो स्वेच्छा से, बिना निमंत्रण के अपने ढोलक चिमटे लेकर जाने अनजाने क्षेत्रों में जा धमकते थे, जहाँ फीस तो क्या, भोजन तक की निश्चितता नहीं थी, उनके योगदान का अवमूल्यन कृतघ्नता की पराकाष्ठा है।

भजनोपदेशक के प्रभाव का आकलन इससे अधिक क्या हो सकता है कि ठाकुर विक्रमसिंह आर्यसमाज के भजनोपदेशक स्वामी भीष्म जी महाराज को अपना कुल गुरु मानते हैं। उन्होंने मंच पर श्रोताओं को बताया कि उनके पूज्य पिता का विवाह संस्कार स्वामी भीष्म जी ने कराया, उनका विवाह संस्कार स्वामी जी ने कराया और वे अपने सुपुत्र का विवाह संस्कार स्वामीजी से कराते तब तक स्वामी जी शरीर छोड़ चुके थे। एक पौराणिक साधु स्वामी भीष्म जी के भजन सुनकर आर्य बन गया, स्वामी रामेश्वरानन्द जी के रूप में गुरुकुल घरौंडा की स्थापना की और भारतीय संसद को सुशोभित किया। जिनके भजनोपदेश के प्रभाव से आर्यजगत् को पूज्य स्वामी ओमानन्द जी व श्री रामचन्द्र विकल जी जैसे नेता मिले। यह अकेले स्वामीजी की बात नहीं है। हमारे भजनोपदेशकों ने न जाने कितने लोगों को नया जीवन दिया और न जाने कितने उजड़े परिवारों को बसाया। ठाकुर विक्रमसिंह नींव के पत्थरों की इस परम्परा का सम्मान चाहते हैं तो यह उनकी महानता ही कही जाएगी। परमात्मा धन तो किसी को दे देता है, किन्तु उसके सदुपयोग की बुद्धि किसी किसी सौभाग्यशाली को प्राप्त होती है। ठाकुर जी ने अपने शुभ संकल्प से इस प्रशस्य यज्ञ का आयोजन किया है। वे कोटिशः धन्यवाद व साधुवाद के पात्र हैं।

आपकी सम्मतियाँ

अगस्त, १५ का शांतिधर्मी हस्तगत हुआ। आद्योपान्त पढ़ा। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक, मनमोहक व प्रेरणास्पद है। देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। बाल वाटिका के अन्तर्गत सभी बच्चों के प्रयास सराहनीय हैं। हर्षित योगी 'जानते हो?' द्वारा इसी प्रकार प्रयासरत रहे तो एक दिन विद्वानों की श्रेणी में होंगे। शाबाश! सुन्दर प्रयास! स्व० पं० चन्द्रभानु के भजन ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद हैं। डॉ० नरेश सिहाग बोहल ने लघु क्षणिका-सबसे बड़ा दु:ख 'भूख' में बड़ा मार्मिक लिखा है। न्यूटन से १५०० वर्ष पहले भारत गुरुत्वाकर्षण के नियम को जानता था। हम ज्ञान-विज्ञान में शिरोमणि थे। भविष्य के सभी शोध भी वेदानुसार ही मिलेंगे। पंचमहाभूत और ईश्वर का अस्तित्त्व तर्कपूर्ण है। कर्त्ता बिना कार्य नहीं और नियंता बिना नियम नहीं। परिक्रमा में मेरी दृष्टि में अंक का सर्वोत्तम लेख देकर हृदय तंत्रिका को झंकृत कर दिया। लेखक को साधुवाद। 'महान् जगद्गुरु भारत का नवसृजन कैसे हो,' लेख के अंतिम अनुच्छेद में विधि भी बतला दी। 'जब द्रोपदी महारानी बनी' राजेशार्य का शोधपूर्ण लेख भ्रमोच्छेदन करने में पूर्ण सक्षम है। 'बात्सल्य की मूरत हैं बेटियाँ' सुबेदार धर्मसिंह की कविता पर साधुवाद! राजा नाहरसिंह और उनके तीन साथियों की वीरगाथा का आलेख चिरस्मरणीय स्थायी छाप छोड़ता है। 'खरबूजे का बंधन' सुन्दर कृति है और जनसाधारण के भी समझ में आने लायक है। लेखक को बधाई। पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल है। इसे घर घर पहुंचाया जाना चाहिए।

ईश्वरसिंह आर्य प्रधानाध्यापक
ग्राम पो० मस्तापुर, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

शांतिधर्मी पत्रिका के उन्नयन का आकांक्षी हूँ। इसमें प्रकाशित प्रत्येक लेख के भाव उज्ज्वल हैं। हर पाठक को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आर्यसमाज के स्तंभ आपके पिता स्व० चन्द्रभानु आर्य की विरासत को आपने अत्युत्तम ढंग से संभाल लिया है। परमात्मा आपको कमनीय स्वास्थ्य और दीर्घायं के वर्चस्व से ओतप्रोत रखे।

महीपाल आर्य (प्रधान हसला हिसार) ९४१६१७७०४१
ग्रा० पो० मतलौडा, जिला हिसार (हरि०)

ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका शांतिधर्मी का अगस्त, २०१५ का अंक मिला, धन्यवाद! मुखपृष्ठ पर हाथ में तिरंगा लिए हुए स्कूली बालिकाओं का चित्र मनमोहक और देशभक्ति के भाव उत्पन्न करने वाला है। सम्पादकीय शांतिप्रवाह जीवन के मार्गदर्शन में सहायक हो सकता है। डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम साहब का लेख प्रत्येक देशवासी के लिए मार्गदर्शक है। डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार के विचार जीवन के दोगलेपन का पर्दाफाश करने वाले हैं। डॉ० विवेक आर्य की परिक्रमा प्रभावित करती है। नरेश सिहाग बोहल ने नवीन जानकारी दी है। स्वास्थ्य के संबंध में डॉ० अनन्तानन्द का लेख ज्ञान के चक्षु खोलता है। बाल वाटिका मनोरंजन के साथ उत्तम शिक्षाप्रद विचार प्रस्तुत करती है। वास्तव में ही शांतिधर्मी वैचारिक दृष्टि से उच्चस्तरीय पत्रिका है।

प्रो० शामलाल कौशल
मकान नं० ९७५-बी/२०
ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

निवेदन

चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

अपने संस्मरण शीघ्र भिजवाएँ

शांतिधर्मी के संचालक और प्रधान सम्पादक व आर्यजगत् के समर्पित भजनोपदेशक श्री पण्डित चन्द्रभानु के रचना संसार, जीवन-दर्शन और जीवन परिचय पर आधारित ग्रंथ 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' का कार्य अंतिम चरण में है। उनके सभी परिचितों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधितों, श्रद्धालुओं, शिष्यों, संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उनसे संबंधित संस्मरण, चित्र आदि या किसी पुस्तक, स्मारिका आदि में उनका उल्लेख, यदि आपके पास उपलब्ध है तो कृपया डाक या ईमेल से भिजवाने की कृपा करें। अन्यथा हमें सूचित करने का कष्ट करें। हम स्वयं आकर उन्हें स्केन/फोटोप्रति के रूप में प्राप्त करेंगे। शांतिधर्मी में प्रकाशित और अभी प्राप्त हो रहे संस्मरणों का भी उक्त ग्रंथ में सादर उपयोग किया जाएगा।

सम्पादक शांतिधर्मी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद-१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
094165 45538, 094162 53826, 098964 12152

श्रद्धांजली/संस्मरण

तपोनिष्ठ भजनोपदेशक, वैदिक धर्म के समर्पित प्रचारक, शांतिधर्मी के संस्थापक, संचालक व सम्पादक

स्व० श्री चन्द्रभानु आर्योपदेशक के प्रेरक संस्मरण

वे एक उच्चकोटि के गहन स्वाध्यायशील आदर्श उपदेशक थे

श्री पं० चन्द्रभानु जी से मेरा सम्पर्क २९ अगस्त २००२ को आर्य समाज उचाना मण्डी के वार्षिक उत्सव पर हुआ था। मै २२ से ३१ अगस्त तक आर्य समाज नरवाना के श्रावणी पर्व पर वेद कथा हेतु गया हुआ था। मेरे एक व्याख्यान में उचाना मण्डी से भी कुछ लोग पधारे थे। उनके विशेष आग्रह पर २९ अगस्त को मेरा एक व्याख्यान आर्य समाज उचाना मण्डी में भी रखा गया। पं० जी वहाँ पर आमंत्रित थे। उस समय मेरा उनसे कोई परिचय नहीं था। लगभग सवा घण्टे का मेरा व्याख्यान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के विषय पर था। उसके उपरान्त पूज्य पं० जी का उपदेश हुआ। मैं उन दिनों प्रचार के क्षेत्र में नया नया ही था, बोलने का बहुत अधिक अभ्यास न था और पं० जी भी मुझसे परिचित न थे। अपने उपदेश में उन्होंने मेरी प्रशंसा की और कहा कि आगे चलकर ये आर्य समाज में एक स्थान प्राप्त करेंगे। वास्तव में यह उनका प्रेम, बडप्पन और नये व्यक्तियों को उत्साहित करने का एक ढंग ही था। उस समय तो उनसे कोई विशेष बात नहीं हो पाई थी, किन्तु अगले ही वर्ष उन्होंने मुझे अर्य समाज जींद जंक्शन के वार्षिक उत्सव पर आमंत्रित भी कर लिया। चार दिन के उस कार्यक्रम में उन्हें समीप से जानने का अवसर मिला। वे एक उच्चकोटि के गहन स्वाध्यायशील पुरीनी पीढ़ी के आदर्श उपदेशकों में से एक थे।

स्मरण रखना चाहिए कि जिस युग में पं० जी ने प्रचार के क्षेत्र में पदार्पण किया, वह आर्यसमाज के उपदेशकों की परीक्षा का युग था। कदम कदम पर चुनौतियाँ स्वागत किया करतीं थीं। साधनों का अभाव था, आने जाने में भी भारी कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती थीं। भोजन तथा आवस की उत्तम व्यवस्था भी नहीं थी।कंधे पर बिस्तर, ढोलक बाजा उठाकर मीलों लम्बी यात्रा करते हुए अनेकों उपेक्षाओं तथा संघर्षों को झेलते हुए हमारे पूर्वजों ने कार्य किया, वह अपने आप में एक आदर्श उदाहरण है। और नई पीढ़ी के लोगों के लिए एक प्रेरणास्रोत है। प्रचार यात्राओं में तीज त्योहारों में तो घरों से दूर होते ही थे, इसके अतिरिक्त सुख दुःख के समाचार भी बहुत देर से मिला करते थे। आजकल की तरह मोबाईल या ईमेल की सुविधा तो थी नहीं, कि समाचार तुरन्त कही भी मिल जाए। घर में या आस पड़ौस में किसी के जीने मरने का समाचार भी उस समय मिला करता था जब सब काज पूर्ण हो जाते थे। किन्तु धन्य है उन वीर सिपाहियों को जिन्होंने अपने कष्टों की परवाह न करते हुए महर्षि दयानन्द के संदेश को गांव गांव और घर घर तक पहुंचा दिया। पं० जी ऐसे ही उपदेशकों में से एक थे। स्वामी सर्वानछ जी महाराज कहा करते थे कि वह कुल धन्य है जिसमें ऋषिभक्त उपदेशक उत्पन्न होते हैं, जो वैदिक धर्म की दुन्दुभि से धरा को गुंजित कर देते हैं।

जींद जंक्शन आर्य समाज के उक्त कार्यक्रम में मैंने एक समय आचमन मंत्रों की व्याख्या की तो पं० जी का मुखमण्डल उस समय गौरव से दमक उठा। उनकी आंखों में मैंने उस समय जो भाव देखे, आज भी मेरे मस्तिष्क में ज्यों के त्यों हैं। व्याख्यान की समाप्ति पर मेरी पीठ थपथपाई और कहा कि हमें आप पर गर्व है कि हमारे नये उपदेशक पुराने आचार्यों की शृंखला में एक कड़ी बनकर जुड़ रहे हैं। मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात थी। जब भी भोजन के लिए उनके घर जाते तो वे हलवा अवश्य बनवाते थे। मैं हलवा कम खाता था, जबरदस्ती मेरी थाली में और डाल देते थे। कहते थे- भाई, उपदेशकों को अच्छी खुराक लेनी चाहिए, नहीं तो कार्य कैसे करोगे?

उनके चले जाने से जो रिक्तता आर्यसमाज में आई है, उसको पूरा कर पाना तो संभव नहीं है, परन्तु जो मार्ग वे हमारे लिए प्रशस्त कर गए हैं, उस पर चलकर हम आर्यजन सफलता अवश्य प्राप्त कर सकते हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह महान आत्मा फिर से आर्यजगत् में अवतरित हो और महर्षि दयानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाए। स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के शब्दों में कहूँ तो-

बार बार नर जीवन पाऊँ- बार बार बलिदान चढ़ाऊँ।
तो भी ऋषि ऋण तेरा मुझसे जाए नहीं चुकाया।।

पं० जी के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजली युक्त-

रामफलसिंह आर्य

महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

उन्होंने हजारों नौजवानों को जीवन का रास्ता दिखाया

स्व० पं० चन्द्रभानु जी सत्यवादी आर्य विचारधारा के धनी महोपदेशक थे। उन्होंने भजनों के माध्यम से समाज में फैली बुराईयों को उखाड़ फैंकने के लिए दूर दूर तक जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करने में अपना सारा जीवन लगाया।

उनकी प्रचार शैली बहुत रोचक और मनोरंजक थी। उनकी एक बात का उल्लेख दर्शनीय है। बच्चे को चुर्णे हो रहे हैं, उसे ठीक करने के लिए टांड पर गहणा रख दिया। बताओ, टांड का और बच्चे का क्या कनैक्शन है? इस प्रकार उनकी शैली में हास्य रस के पुट से लोग लोट पोट हो जाते थे। वीर रस की कथाएँ सुनाते तो बच्चों बूढ़ों में जोश भर जाता था। करुण रस की बात करते तो माताएँ आँसू बहाने लगती थीं। जब वे मेरे गांव में प्रचार के लिए आते थे तो सारे गांव में चर्चा हो जाती थी कि चन्द्रभान जी की पार्टी आई है। लोग अपने कार्य जल्द निपटा कर प्रचार में जाने को उत्सुक हो जाते थे। भजन सुनने के लिए चौपाल में इतनी भीड़ लग जाती थी कि पांव रखने को भी जगह नहीं रहती थी। लोग प्रचार शुरु होने से पहले ही अपना बैठने का स्थान रोक लेते थे। माताएँ, बहनें भी अपने पीढे मूढे प्रचार के स्थान पर पहले ही रख आती थीं और अपना स्थान पक्का कर लेतीं थीं। उनका प्रचार बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली था। शेर जैसी गरजती आवाज थी। उनके प्रभाव का यह आलम था कि कोई अन्य प्रचारक आता तो लोग प्राय: यह कहकर अरूचि दिखाते थे कि 'इसा के चन्द्रभान आर्‌या है?' उन्होंने हमारे गांव में अनेक बार यज्ञ करवाए, विवाह संस्कार भी करवाए। उनको गांव का बच्चा बच्चा जानता था। हमने उनको वृद्धावस्था में भी शेर की तरह दहाड़ते हुए सुना है।

चन्द्रभानु जी का जीवन संघर्षमय रहा। लेकिन वे हर परिस्थिति में एक समान रहते थे। उन्होंने बहुत से भटके हुए नौजवानों को रास्ते पर लाने का कार्य किया। दूसरों की सहायता करने के लिए वे हर पल तत्पर रहते थे। वे अधिक जोर सत्य पर देते थे। उनकी सोच थी कि हर व्यक्ति सत्य का आचरण करे तो देश बहुत आगे बढ़ सकता है। उन्होंने वेद और ऋषि दयानन्द के चिन्तन को अपने जीवन में आत्मसात् किया हुआ था और इसी का प्रसार प्रचार करना वे अपना परम धर्म मानते थे। इस मिशन को चन्द्रभानु जी ने अपने जीवन का उद्देश्य बनाया और जीवन भर धन की परवाह न करते हुए उसे निभाया। उस समय देश गुलाम था, जब पं० जी ने समाज की सेवा का रास्ता चुना। वे एक बहुत अच्छे वक्ता थे, चाहते तो नेता भी बन सकते थे। जबकि उन्होंने बहुत से नेताओं का प्रचार करके उन्हें 'नेता' बनाया। यहाँ तक कि मंत्री पद तक भी पहुंचाया। वे एक अच्छे व्यापारी भी बन सकते थे। कवि तो वे थे ही, पर उन्होंने यह रास्ता अपनाया, क्योंकि उन्हें अपने घर-परिवार और अन्य आकर्षणों से देश अधिक प्यारा था।

प्रचार के बाद मेरे पास अनेक बार रुकते थे। सोने से पहले अनेक जीवनोपयोगी उपदेश करते थे जैसे चित्र पर माला नही डालनी चाहिए, चरित्र का अनुकरण करना चाहिए। ऐसे ही उनके एक उपदेश ने हजारों नौजवानों की तरह मेरे जीवन को भी सफल बना दिया। एक बार रात को ११ बजे प्रश्न उत्तरों के आदान प्रदान के क्रम में उन्होंने कहा- देश के लोगों की डांवाडोल अवस्था, अधूरी दिलचस्पी, आधे मन से सोचना, आधी लगन से जुटना असफलता का प्रधान कारण है। यदि नियत लक्ष्य में सारी शक्तियों को जुटा दिया जाए तो नि:सन्देह मनुष्य बड़ी से बड़ी इच्छा को पूर्ण कर सकता है। उनके इन विचारों पर मैं काफी देर तक चिन्तन करता रहा। क्योंकि उन दिनों मैं भी उलझन में था। मैंने पं० जी की बात को पल्ले बांध लिया। उन दिनों मैं एक फैक्टरी में साधारण कर्मचारी था। मैंने पं० जी की बात को ध्यान में रखते हुए जो भी काम किया पूरे मन से सत्य धर्म के अनुसार किया। इससे मुझे सफलता ही सफलता मिलती चली गई।

फैक्टरी में डाई फिटर मोहम्मद सुलेमान मलेरकोटला का बूढ़ा आदमी था। उसके भाई की मृत्यु होने के कारण वह काम छोड़कर चला गया। मैं सुलेमान का हैल्पर था। फैक्टरी मालिक ने कहा सतबीर सिंह क्या तू ये दो डाई बना लेगा? पावर हैम्बर व जिन्दरी दो प्रकार की डाई बनती थी। मैंने पूरे विश्वास के साथ हाँ कर दी। उसने कहा मैटिरियल खराब हुआ तो वेतन काट लिया जाएगा। मुझे पं० जी का उपदेश याद था। मैंने पूरी लगन से कार्य किया और मेरी दोनों डाई पास हो गई। उस समय मेरा वेतन ५२ रुपये था, मालिक ने उसी समय मेरा वेतन ११० रुपये कर दिया। हरियाणा बनने के बाद वह फैक्टरी पंजाब चली गई। मैं बेरोजगार हो गया। पं० जी के विचारों के अनुसार चलते हुए मैंने पूरी लगन से जेबीटी पास की। यह सब पं० जी के उपदेश का ही असर था। सरदार दीदारसिंह जी ने मुझे जाट हाई स्कूल में ही अध्यापक रख लिया। कुछ समय बाद चौ० नारायणसिंह मुख्यअध्यापक ने मुझे जाट प्राथमिक पाठशाला का मुख्यअध्यापक नियुक्त कर दिया। ३५ साल तक मैंने संस्था में काम किया। सेवानिवृत्ति के बाद भी सर छोटूराम शिक्षा समिति में ३ साल तक सदस्य रहा। यह सब मुझे चन्द्रभान जी के उपदेश के अनुसार चलने का ही फल मिला और आज भी मिल रहा है।

मा० सतबीर आर्य जुलानी
प्रधान आर्यसमाज जींद जं०

राजभवन में राजर्षि

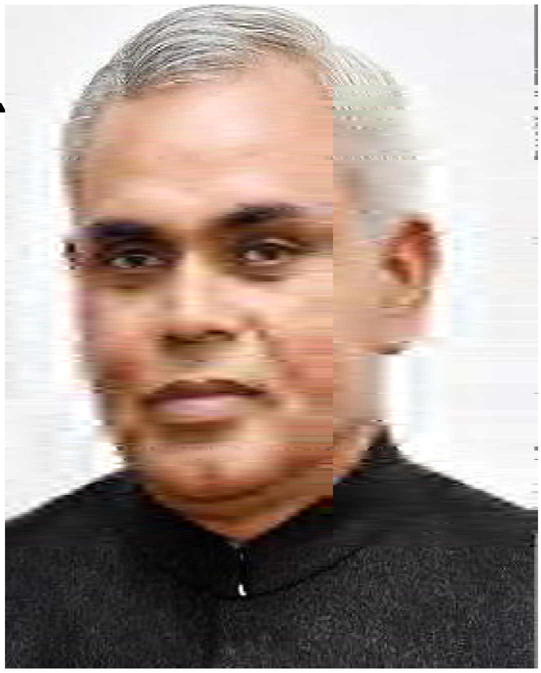

❐सहदेव समर्पित

श्री आचार्य देवव्रत जी का जन्म पानीपत के निकट एक छोटे से गांव में एक धर्मनिष्ठ और पुरुषार्थी आर्यसमाजी श्री लहरीसिंह आर्य के गृह में १८ जनवरी १९५९ को हुआ। आप पंचमहायज्ञों का नियमित अनुष्ठान करने वाले आदर्श आर्य पुरुष थे। यहाँ तक कि हल जोतने जैसे आवश्यक व श्रमसाध्य कार्य भी अग्निहोत्र करने के पश्चात् ही प्रारम्भ करते थे। इस सात्त्विक पारिवारिक वातावरण में संस्कार ग्रहण करने वाले श्री देवव्रत को छोटी अवस्था से ही गुरुकुलीय वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने स्नातक, परास्नातक (हिंदी, इतिहास), बी० एड० डिग्री, डिप्लोमा इन-योग विज्ञान, डॉक्टर ऑफ नेचरोपैथी एंड योगिक साइंस आदि उपाधियाँ प्राप्त करके शिक्षा के माध्यम से ही वेद और महर्षि दयानन्द के मिशन के लिये अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया। २१ वर्ष की अवस्था में ही १९८१ में आपकी योग्यताओं को देखते हुए आर्यसमाज ने आपको स्वामी श्रद्धानन्द व स्वामी स्वतंत्रानन्द की तपस्थली गुरुकुल कुरुक्षेत्र का अति महत्त्वपूर्ण दायित्त्व सौंप दिया।

गुरुकुल का कायाकल्प

गुरुकुल की स्थापना राष्ट्रपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी के करकमलों से हुई थी। स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने अपने तप से इसको पाला पोसा था। लेकिन जब आचार्य जी ने दायित्त्व संभाला तो गुरुकुल की हालत अत्यंत दयनीय थी। आचार्य जी ने अपने धीर गंभीर पुरुषार्थ और एकनिष्ठ समर्पण से गुरुकुल का कायाकल्प कर दिया। उन्होंने अपने प्रभाव से एक सकारात्मक सोच वाली टीम का निर्माण किया और सभी सामाजिक विसंगतियों से अत्यंत धीरतापूर्वक दो चार होते हुए गुरुकुल को एक ऐसे स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया कि गुरुकुल कांगड़ी के पश्चात् आर्यसमाज की गौरवशाली संस्था के रूप में गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाम आता है।

आपके नेतृत्त्व में सम्पूर्ण गुरुकुल परिसर का नवीकरण हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में तो इस संस्था का यशस्वी स्वरुप सामने आया ही, कि जहाँ पहले प्रवेश के लिए बहुत कम विद्यार्थी आते थे, वहीं अब इस गुरुकुल में प्रवेश पाना विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए एक उपलब्धि के रूप में जाना जाने लगा। इसी बीच सभी भवनों का पुनर्निमाण हुआ। गुरुकुल में आदर्श वैदिक दिनचर्या व संस्कारों के साथ साथ अध्ययन, अध्यापन एवं खेलकूद की सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। परम्परागत विद्या की रक्षा और प्रचार प्रसार के लिए आर्ष महाविद्यालय की स्थापना की गई। क्रीड़ाक्षेत्र में प्रतिभाओं के परिमार्जन के लिए शूटिंग रेंज की स्थापना की गई जिसमें गुरुकुल ने प्रभूत यश प्राप्त किया। गुरुकुल में आई० आई० टी० - पी० एम० टी०, एन० डी० ए० एकेडमी स्थापित की गई। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान से प्रभावित होकर बेटियों के लिए भी इसी प्रकार के एक आदर्श शिक्षण संस्थान के स्वप्नदर्शी आचार्यजी

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में वर्तमान पद एवं दायित्त्व

❖१२ अगस्त, २०१५ से राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश ।
❖कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।
❖कुलाधिपति, चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर।
❖कुलाधिपति, डॉ० यशवंत सिंह परमार वानिकी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, सोलन।
❖अध्यक्ष, भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, हिमाचल प्रदेश।
❖अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश बाल कल्याण परिषद्।
❖अध्यक्ष, राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड।
❖अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश राज्य पूर्व सैनिक पुनर्निर्माण एवं पुर्नवास विशेष निधि प्रबंधन एवं प्रशासन समिति।
❖अनुसूचित एवं जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन।

ने अप्रैल २०१५ से अम्बाला में चमन वाटिका अंतर्राष्ट्रीय कन्या गुरुकुल की स्थापना की है।

चिकित्सालय

गुरुकुल को इस स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए आचार्य जी ने घोर पुरुषार्थ किया। आचार्य जी को दिन रात एक ही धुन रहती कि इस संस्था को भारतवर्ष की एक आदर्श संस्था बनाना है। विद्यालय की व्यवस्था देखना, भवन निर्माण का कार्य, प्रशासन की व्यवस्था और इन सबसे बढ़कर गुरुकुल के विकास और संचालन के लिए अन्न-धन की व्यवस्था करना। धुन के धनी आचार्य जी ने जो पुरुषार्थ किया वह एक व्यक्ति के लिए कर पाना किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस कारण उनके स्वास्थ्य में भी बाधा आई। यहाँ तक कि एक समय तो प्राणों तक का संकट ही उपस्थित हो गया। देश भर के प्रसिद्ध चिकित्सा संस्थानों में उपचार के बाद भी कोई आशा की किरण नहीं दिखाई दे रही थी। अन्ततः आचार्य जी ने प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लिया और उनके जीवन की रक्षा हुई। इस संकट का उपयोग भी आचार्य जी ने एक प्रेरणा के रूप में किया। गुरुकुल परिसर में स्वामी श्रद्धानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना की, जो आज अनेक असाध्य रोगों से पीड़ित लोगों को प्राणदान दे रहा है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग का प्रचार-प्रसार करना आपकी विशेष रूचि का विषय रहा है। वृक्षारोपण एवं यज्ञ चिकित्सा द्वारा भी आप प्रदूषणमुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहे हैं।

आचार्य जी से भेंट करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र० के महामंत्री रामफलसिंह आर्य व अन्य

गौ कृषि की रक्षा

महर्षि दयानन्द के चिन्तन को आचार्य जी ने आत्मसात् किया हुआ है। गौ एवं उत्तम कृषि न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव हैं, अपितु व्यक्ति के जीवन और समाज में सात्त्विकता एवं समृद्धि को भी सुनिश्चित करती हैं। आचार्य जी ने गुरुकुलों में रहने वाली गौशालाओं की तरह गौशाला का संचालन नहीं किया, अपितु उसे एक अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापित कर दिया। गोवंश सुधार के लिए आचार्य जी ने आधुनिक तकनीक की सहायता से सार्थक प्रयास किये और सफलताएँ प्राप्त कीं। गुरुकुल की गौशाला के उन्नत वंश की सहायता से गुरुकुल के बाहर भी गोवंश के सुधार के लिए सहायता मिली। कृषि के उन्नयन के लिए आचार्य जी ने एक नवीन मार्ग की स्थापना की। मृदा प्रदूषण के निवारण और अन्न उत्पादन में गिरावट की वैश्विक समस्या के निवारण के लिए आचार्य जी ने जैविक खाद के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया और कृषि में गाय की उपयोगिता को प्रमाणित करने के लिए १७५ एकड़ क्षेत्र में जैविक खेती के प्रयोग एवं कार्यान्वयन किये। इस नवीन प्रयोग को अकादमिक प्रामाणिकता दिलाने के लिए समय समय पर गुरुकुल में देश भर के प्रख्यात कृषि वैज्ञानिकों को आमंत्रित करके विभिन्न सेमिनारों, गोष्ठियों का आयोजन किया जिससे आधुनिक प्रचार माध्यमों के द्वारा देश भर के वैज्ञानिकों का इस ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। आपने गौ-नसल सुधार व जैविक कृषि हेतु निःशुल्क शिविर लगाकर जनता में भी इस तकनीक को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया।

विशेष रुचियाँ :

आचार्यजी ने महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेते हुए जिस राष्ट्रीय व मानवतावादी चिन्तन को आत्मसात् किया, उसके प्रचार प्रसार और सम्मान के लिए आचार्यजी सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। आपने वैदिक मूल्यों की स्थापना के लिए देश भर में व्याख्यान दिये हैं और गंभीर एवं लोकप्रिय वक्ता के रूप में जाने जाते हैं। आप पत्र/पत्रिकाओं में लेखों तथा यौगिक एवं वैदिक गतिविधियों के आयोजन के माध्यम से युवाओं को सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति एवं वैदिक मूल्यों के प्रचार हेतु आपने स्विट्जरलैण्ड, नीदरलैण्ड, हालैण्ड, फ्रांस, इंग्लैंड, इटली, वैटिकन सिटी, नेपाल व भूटान आदि देशों की यात्राएँ भी की हैं। मासिक पत्रिका 'गुरुकुल दर्शन' के प्रधान संपादक के रूप में आपने बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

लेखक के रूप में आपने स्वास्थ्य का अनमोल मार्ग : प्राकृतिक चिकित्सा (अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण); स्वर्ग की सीढियाँ (पंचमहायज्ञ) वाल्मीकि का राम-संवाद (अनुवाद); गुरुकुल कुरूक्षेत्र का गौरवशाली इतिहास आदि के माध्यम से समाज को गंभीर और प्रेरक साहित्य प्रदान किया है।

सामाजिक अवदान/संबद्धता

गुरुकुल के अतिरिक्त आचार्य जी विभिन्न सामाजिक व लोकोपकारी संस्थाओं से संबंद्ध रहकर समाज उत्थान के कार्यों में निरन्तर मार्गदर्शन करते रहे हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य आचार्यजी चमनवाटिका अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल के संस्थापक, स्वामी श्रद्धानंद योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के निदेशक, चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय के हरियाणा सरकार द्वारा नियुक्त सदस्य, आर्य विद्या परिषद् हरियाणा के अधिकारी, हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद् के मानद सदस्य, हरियाणा गोशाला संघ व हरियाणा गो सेवा आयोग के सदस्य, भारतीय किसान संघ, हरियाणा के प्रधान, महर्षि दयानन्द रिसर्च सेन्टर धड़ौली, नवोदय विद्यालय सलाहकार समिति निवारसी के सदस्य, अखिल भारतीय गुरुकुल खेलकूद प्रतियोगिता के संरक्षक सदस्य एवं श्री गोपाल कृष्ण गोशाला, कुरूक्षेत्र के सचिव के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ अवदान किया है।

सम्मान जिनसे स्वयं सम्मानित हुए : आचार्यजी द्वारा प्राप्त कतिपय सम्मान एवं पुरस्कार

❖इण्डिया इन्टरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा २२ अगस्त २००३ को भीष्म नारायण सिंह जी, महामहिम राज्यपाल तमिलनाडु द्वारा 'भारत ज्योति अवार्ड', 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलैन्स' अवार्ड एवं 'श्रीमती सरला चोपड़ा' अवार्ड।

❖अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीच्यूट द्वारा २१ अगस्त २००२ को अमेरिकन मेडल ऑफ आनर से सम्मानित।

❖ग्रामीण भारत की गैर सरकारी संस्थाओं का परिसंघ (सी० एन० आर० आई०) नई दिल्ली द्वारा १९ अप्रैल, २००५ को 'सर्टिफिकेट ऑफ आनर इन सर्विस ऑफ रूरल इण्डिया' से सम्मानित।

❖भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति पी० एन० भगवती द्वारा २००९ में 'जनहित शिक्षक श्री अवार्ड' से सम्मानित।

❖ऋषि पब्लिक वेलफेयर ट्रस्ट कुरुक्षेत्र द्वारा ८ मई, २००७ को 'समाज सेवा सम्मान' से सम्मानित।

❖हिमोत्कर्ष साहित्य, संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद ऊना द्वारा १२ फरवरी, २००६ को 'हिमोत्कर्ष राष्ट्रीय एकात्मकता पुरस्कार' से सम्मानित।

❖परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा 'आर्य संस्था व्यवस्थापक सम्मान' से सम्मानित।

❖उपभोक्ता मंत्रालय द्वारा ३० नवम्बर, २००७ को प्राचीन एवं नैतिक मूल्यों के सरंक्षण हेतु प्रशस्ति पत्र।

❖अक्षय ऊर्जा मंत्री हरियाणा द्वारा २० अगस्त, २०११ को अक्षय ऊर्जा सम्मान से सम्मानित।

❖सार्वदेशिक आर्यवीर दल द्वारा 'विशिष्ठ सेवा सम्मान'।

❖ऑल इंटलैक्चुअल परिसंघ एवं शोध केंद्र कुरुक्षेत्र द्वारा 'इंटलैक्चुअल पर्सनलिटी (विद्वान रत्न)' सम्मान से अगस्त २०१३ को सम्मानित।

❖आर्यसमाज आनंद नगर, राजपुरा पंजाब द्वारा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रोत्साहन हेतु शिविर लगाने के लिए १२ अगस्त, २०११ को प्रशस्ति पत्र।

❖सांइस ओलम्पियाड फाउंडेशन द्वारा विज्ञान व गणित विषयों को लोकप्रिय बनाने के सतत् प्रयास के लिए प्रशस्ति पत्र।

❖डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली द्वारा वैदिक मूल्यों के विकास के लिए ३० अप्रैल २०१२ को प्रशस्ति पत्र।

❖आर्यसमाज रादौर (यमुनानगर) द्वारा वैदिक मूल्यों के विकास के लिए प्रशस्ति पत्र।

❖आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा समाज सुधारक के रूप में प्रशंसनीय योगदान के लिए 'विशिष्ट सम्मान'।

❖मूडी इन्टरनेशनल सर्टिफिकेशन ISo~ 9001:2008 द्वारा क्वालिटी मैनेजमेन्ट हेतु 'प्रशस्ति पत्र'।

❖रेडक्रॉस सोसायटी कुरूक्षेत्र द्वारा रक्त दान शिविर आयोजित करने हेतु 'प्रशस्ति पत्र'।

❖कुरूक्षेत्र के बाढ़ पीड़ितों का सामयिक सहायता पहुँचाने के लिए 'प्रशस्ति पत्र' द्वारा सम्मानित।

भेंटवार्ता

हर वर्ग को सुख पहुँचा सकूँ, यह मेरा ध्येय है : आचार्य देवव्रत

हिमाचल राजभवन की फिजा बदल गई है। वेद मंत्रों का उच्चारण और यज्ञ की विशुद्ध महकती खुशबू यहाँ भारतीय संस्कृति व मूल्यों की अनुभूति करवा रही है। राजभवन के आंगन में अब गाय का जोड़ा विचरण करता है और आचार्य का पहला गोग्रास उन्हें मिलता है। यह माहौल आज के दौर में अकल्पनीय लगता है लेकिन यह वास्तविकता है।

संस्कृत में शपथ लेने वाले राज्यपाल आचार्य देवव्रत कहते हैं, 'संस्कृत में ही संस्कृति छिपी है, मैंने तभी इसमें शपथ ली।' 'मेरे समय में टाट भी कंधे के नीचे पकड़ कर स्कूल में गाचनी मिट्टी वाली तख्ती पर लिखा जाता था। मैं नितांत सामान्य परिवार से था। मेरे पिता भी सामान्य व्यक्ति थे।' अपनी पुरानी यादों का जिक्र करते हुए कहते हैं- 'मुझे याद है कि गुरुकुल की शुरुआत में कंधे पर बोरा उठाकर भी काम किया। एक ध्येय था कि सर्व कल्याण के लिए कुछ कर सकूं। हिमाचल में भी जाति प्रथा मुक्ति, किसान कल्याण व युवाओं को नशे से निकालने का विचार लेकर आया हूँ।'

वस्तुतः आचार्य देवव्रत का व्यक्तित्त्व इस मायने में विशेष है, क्योंकि न तो वे नेता हैं न ही कोई उनकी राजनैतिक पृष्ठभूमि है। अब राजभवन में कोई बिजली का बल्ब भी बिना वजह नहीं जलता। यह स्टाफ को तब समझ में आया जब उन्होंने खुद कमरे छोड़ने से पहले सभी बत्तियाँ बुझानी शुरू कीं। अपने कमरे में सिर्फ एक बल्ब जलाते हैं। 'मैं चाहता हूँ कि जो बिजली बचे वह किसान को खेती की पैदावार में मदद करे।' अब राजभवन में दो बार हवन यज्ञ होता है। ठीक १० बजे सभी अधिकारी व कर्मचारी ड्यूटी पर इसलिए पहुंच जाते हैं क्योंकि राज्यपाल पहले ही अपने दफ्तर बैठे होते हैं। कभी वीरानं रहने वाले राज्यपाल दफ्तर के बाहर मिलने वालों का तांता है।

स्वामी दयानंद के आदर्शों व विचारों से प्रभावित राज्यपाल की अभिव्यक्ति भी कमोबेश इन्हीं धारणाओं पर केंद्रित है। राज्यपाल का लक्ष्य बिलकुल साफ है। वे सामाजिक बुराइयों को दूर करना चाहते हैं। वे कहते हैं- 'मैं राज्यपाल पद का सुख भोगने नहीं आया हूँ। हर वर्ग को सुख पहुँचा सकूँ, यह मेरा ध्येय है।'

'राजभवन में मांसाहार बंद है। मेरी प्रवृत्ति किसी को कष्ट देना नहीं है। किसी को जीवन दे नहीं सकते तो छीनना भी क्यों। मेरा बिल्कुल सात्विक रहन-सहन है। मिर्च, मसाले नहीं लेता। पकवान का भी शौकीन नहीं हूँ। साधारण दाल व चपाती ही मेरे लिए पर्याप्त हैं। समाज में कई लोग ऐसे भी हैं, जिन्हें ये भी नहीं मिलता। कुरुक्षेत्र में अपने हाथ से गौशाला तैयार की है। विभिन्न प्रजाति की दो से ढाई सौ गाय धीरे-धीरे गौशाला में एकत्र की। ब्रीड देकर तैयार की गाय बीस से ४५ लिटर दूध देती हैं। मांस का सेवन नहीं करता, दूध मैं डटकर पीता हूँ। गाय सिर्फ घास ही तो खाती है लेकिन देती उससे भी कहीं अधिक है, जो जैविक कृषि का आधार है।'

'जैविक कृषि व गौ पालन को लेकर शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। शिविर में सिर्फ रिबन काटकर उद्घाटन करने तक ही मेरा कार्य सीमित नहीं रहेगा बल्कि किसानों व वैज्ञानिकों के बीच ही रहूंगा। फसलों को नुकसान पहुंचा रहे जंगली जानवरों से निजात दिलाने के लिए भी हल निकाला जाएगा। लोगों के बीच जाकर सुझाव एकत्र किए जाएगें।'

'मुझे मिशन से भटकना नहीं है। होने वाली बैठक में अधिकारियों को यही निर्देश दिए जाएंगे कि राजनीति को निकालो। लोगों की भलाई के लिए जिस ओहदे पर बैठे हैं, उसकी जिम्मेदारी को समझें। राज्यपाल, उपायुक्त, अफसर हम तभी हैं जब आमजन ने बनाया है। इसलिए इन गरिमापूर्ण पदों पर रहकर आम लोगों को दुत्कारना नहीं है। ये भी परिवार का अंग हैं। कांटा पैर में चुभता है तो आंसू आंख से आता है। छोटे से ही बड़ा परिवार है। अधिकारियों को अहंकार को त्यागना होगा।'

'बैठक में सभी अधिकारियों, संस्थाओं, धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति सुनिश्चित की गई है। बैठक में चार बिंदुओं पर चर्चा होगी- नशा मुक्ति, जैविक कृषि, गौपालन, चौथा पर्यावरण संरक्षण व स्वच्छता अभियान। वर्तमान में किसान यूरिया, डीएपी आदि खाद का इतना अधिक प्रयोग कर रहे हैं कि फसल का खर्च तो बढ़ ही गया है, भूमि की उर्वरता खत्म और पानी की मांग भी अधिक हुई है। इससे आहार के रूप में मिल रहा है ऐसा धीमा जहर जिससे लोग असाध्य बिमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। गौपालन व जैविक खेती एक दूसरे के पूरक बनेंगे। गौपालन जैविक खेती में मदद करेगा, सारी उपलब्धता गाय पूरी करेगी।'

'हिमाचल को आदर्श राज्य बनाने के लिए कार्य किया जाएगा। इसके लिए प्रदेश के सभी जिला मुख्यालय पर हर विभाग के अधिकारियों व पंचायत प्रतिनिधियों से बैठक की जाएगी। इस दौरान लोगों से सुझाव भी लिए जाएंगे, जिससे हर व्यक्ति हमारे साथ जुड़े और प्रदेश में परिवार की तरह काम चले। धीरे-धीरे प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था को देखना व समझना चाहता हूं। शिक्षा का स्तर बेहतर करने के लिए तभी उस दिशा में कदम उठाया जाएगा।'

(दैनिक जागरण, डॉ० रचना गुप्ता से वार्त्ता/सम्पादित अंश)

अटल है कर्म फल व्यवस्था

❒**रामफल सिंह आर्य**, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हि० प्र० (०९४१८४-७७७१४ ०९४१८२-७७७१४)

जैसे बछड़ा सहस्रों गऊओं में अपनी मां को पहचान कर उसे पा लेता है, वैसे ही पहले का किया हुआ कर्म भी अपने कर्त्ता के पास पहुँच जाता है।

ईश्वर द्वारा रचित इस सृष्टि में प्रत्येक पदार्थ, चाहे वह जड़ हो या चेतन, एक व्यवस्था में बंधा हुआ है। प्रत्येक पदार्थ के कुछ नियम हैं जिनको तोड़ने की शक्ति किसी में भी नहीं है। एक विशेष क्रम है जो सर्वत्र एक समान कार्य कर रहा है। प्रत्येक पदार्थ के कुछ विशेष गुणधर्म हैं जिनके अनुसार वह कार्य करता, बनता व बिगड़ता है। ये नियम, गुण व धर्म प्रभु की सार्वदेशिक, सार्वकालिक व सार्वभौमिक व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं।

उदाहरण के रूप में जल को ही ले लीजिये। यह दो गैसों- हाइड्रोजन एवं आक्सीजन का मिश्रण है (H_2O) जिन्हें एक निश्चित अनुपात (१:२) में मिलाने से ही जल बनता है। यदि अनुपात ठीक न होगा तो जल बनेगा ही नहीं। फिर उसे अग्नि के सम्पर्क में लाने से वह पुनः अपने मूल में परिवर्तित हो जायेगा। एक निश्चित तापमान पर रखने पर वह एक नई वस्तु बर्फ में बदल जायेगा। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक पदार्थ के कुछ नियम निश्चित हैं।

लेकिन जड़ तथा चेतन के नियमों में कुछ भिन्नता है। जड़ वस्तुएँ जहाँ एक निश्चित नियम में बंधी हुई कार्य करती हैं तथा सर्वत्र उसके अधीन रहती हैं, वहीं चेतन जगत् में जीव को कर्म करने में स्वतन्त्रता रहती है। इसी स्वतन्त्रता के कारण चेतन जगत् के नियम जड़ जगत् से भिन्न हो जाते हैं। अतः स्वतन्त्र रूप से किये जाने वाले कर्मों की अपेक्षा से उनके फल की व्यवस्था भी न्यायकारी प्रभु द्वारा निश्चित है। क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र एक ज्ञानवान प्राणी है अतः वह कैसा भी कर्म कर सकता है- अच्छा या बुरा, या न भी करे इसमें उसकी इच्छा है। परन्तु एक बार यदि कोई भी कर्म वह कर लेता है तो फिर फल के भोगने में वह परतन्त्र हो जाता है। उसका अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं। फल तो ईश्वरीय व्यवस्था पर ही निर्भर है। गीता में कहा है कि:-

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।(गीता)

यह कभी किसी प्रकार से भी संभव नहीं है कि कोई कर्म करे और उसे उसका फल न मिले। यद्यपि मनुष्य समुदाय में कर्म फल व्यवस्था दो प्रकार से कार्य कर रही है, एक मनुष्यों के अपने विधि विधानानुसार अर्थात् राज्य व्यवस्थानुसार और दूसरी ईश्वरीय व्यवस्थानुसार। राज्य व्यवस्था भी एक प्रकार से वेद के आदेशानुसार ईश्वरीय व्यवस्था ही है परन्तु उसमें अनेक कारणों से दोष उत्पन्न होना संभव है। अल्पज्ञता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, अहंकार, लालच, पक्षपात, अज्ञान आदि अनेकों कारण हैं जिनके द्वारा अन्याय होना, कर्म फल व्यवस्था का भंग होना संभव है। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि राज्य व्यवस्था सर्वोपरि एवं अन्तिम नहीं है, उसके ऊपर ईश्वरीय व्यवस्था है। यदि कोई धोखे, छलकपट, चालाकी, झूठ आदि का सहारा लेकर राज्य की न्याय व्यवस्था से बच निकलता है तो ईश्वरीय व्यवस्था में उसे दण्ड अवश्य मिलेगा। यह अटल है। उस व्यवस्था में यहाँ के साधन काम नहीं आते हैं। जो दण्ड रूप में दुःख, बुरे कर्म के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं उनका इस संसार में किसी के पास कोई उपचार नहीं है, वे तो अवश्य ही भोगने पड़ेंगे। इसमें अनेकों शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

राजा दशरथ के अत्यन्त सुयोग्य पुत्र, जिन्हें संसार भगवान के रूप में आज तक पूजता है, श्री रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक का समय था। चारों ओर उत्सव की तैयारियां चल रही थीं। राजमहल से झोंपड़ी तक सर्वत्र उल्लास की लहर दिखाई दे रही थी। ऐसे समय में एक विघ्न आन उपस्थित हुआ जिसके परिणामस्वरूप श्री रामचन्द्र जी को चौदह वर्ष के लिये वन में जाना पड़ा और महाराज दशरथ को उनके वियोग में प्राण गंवाने पड़े। जिस समय महाराज रुग्ण होकर मृत्यु शय्या पर पड़े थे उस समय उन्होंने क्या कहा, अवलोकन कीजिये।

यदाचरति कल्याणि शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
तदेव लब्धे भद्रे कर्ता कर्मजमात्मनः।। (अयो० का० 49/3)

दशरथ कौशल्या से बोले-हे कल्याणी! मनुष्य अच्छा या बुरा जैसा भी कर्म करता है, उस भले या बुरे कर्म का फल कर्ता को अवश्य मिलता है।

कश्चिदाम्रवणं छित्वा पलाशां च निषिञ्चति।
पुष्पं दृष्टवा फले गृध्नुः स शोचति फलागमे।। (49/4)

जो व्यक्ति पलाश के लाल-२ फूलों को देखकर फल पाने की अभिलाषा से आम के पेड़ों को कटवा कर पलाश को सींचता है, फल पाने के समय फल न पाकर उसे निश्चय ही पछताना पड़ता है।

श्रीराम को वन में रहते हुए अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। राज्य चला गया, वनों में अनेक बाधायें आई, पत्नी को धोखे से रावण उठा ले गया। श्रीराम कहते हैं-

पूर्वं मया नूनमभिप्सितानि पापानि कर्माण्यसत्कृतानि।
तत्रायमद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं यदहं विशामि।।
(वा० रा० अरण्य० 37/18)

पूर्व जन्म में मैंने निश्चय ही एक के पश्चात् एक यथेष्ट पाप किये हैं। उन्हीं पापों का फल आज मुझे प्राप्त हो रहा है और मेरे ऊपर दुःख के ऊपर दुःख आ रहे हैं।

ये साक्षियाँ स्पष्ट संकेत कर रही हैं कि जीव कर्म फल व्यवस्था में बंधा हुआ है, जिससे बचने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। कोई कितना बड़ा योगी, तपस्वी, विद्वान या चाहे कुछ भी क्यों न हो, इस व्यवस्था को भंग नहीं कर सकता। महाभारत में भी कर्म फल के बारे में बहुत सुन्दर कहा गया है। अवलोकन कीजियेः-

सुशीघ्रमपि धावन्तं विद्यानमनुधावति।
शेते सह शयानेन येन येन यथाकृतम्।।
उपतिष्ठति तिष्ठन्तं गच्छन्तमनुगच्छति।
करोति कुर्वतः कर्मच्छायेवानुविधियते।।(शान्ति० 44/6,7)

जिस-२ मनुष्य ने जैसा कर्म किया हुआ होता है, वह उसके पीछे लगा रहता है। यदि कर्मकर्त्ता शीघ्रतापूर्वक दौड़ता है तो वह भी उतनी ही तेजी से उसके पीछे दौड़ता है। जब वह सो जाता है तो उसका कर्मफल भी उसके साथ सो जाता है। जब वह खड़ा हो जाता है तो उसका कर्म भी खड़ा हो जाता है और जब मनुष्य चलता है तो वह भी उसके पीछे चलने लगता है। इतना ही नहीं, कोई कार्य करते समय भी कर्म संस्कार उसका साथ नहीं छोड़ता, सदा छाया के समान पीछे लगा रहता है।

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति।। (शान्ति० 44/14)

जैसे बछड़ा सहस्रों गऊओं में अपनी मां को पहचान कर उसे पा लेता है, वैसे ही पहले का किया हुआ कर्म भी अपने कर्त्ता के पास पहुँच जाता है।

मनुस्मृति में भी कर्म के बारे में कहा गया हैः-

अधार्मिको नरो यो हि यस्य वाप्यनृतं धनम्।
हिंसारत च यो नित्यं नेहासौ सुखमेधते।। (४/१७०)

जो मनुष्य अधार्मिक है और जिसका धन अधर्म से संचित किया हुआ है और जो सदा हिंसा अर्थात् वैर में प्रवृत्त रहता है, वह इस लोक और परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में भी सुख को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। अर्थात् बुरे कर्मो का फल दुःख रूप में अवश्य ही मिलेगा।

नाधर्म चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति।। (मनु० 4/172)

मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र प्राप्त नहीं होता, वैसे ही किये हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नहीं होता, किन्तु धीरे-२ अधर्मकर्त्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है। उसके पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है।

यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु।
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः।। (मनु० 4/173)

यदि अधर्म का फल कर्त्ता की विद्यमानता में न हो, तो पुत्रों; यदि पुत्रों के समय न हो तो, नातियों पोतों के समय अवश्य प्राप्त होता है। किन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि कर्त्ता का किया हुआ कर्म निष्फल होवे।

कर्म फल व्यवस्था अत्यन्त गहन है जैसा कि महर्षि व्यास ने कहा है- कर्मगतिश्चित्रा दुर्विज्ञाना चेति।। अर्थात् कर्म फल प्रदान करने की पद्धति अल्पज्ञ जीवात्मा के लिए विचित्र अर्थात् आश्चर्यजनक है, और दुर्बोध्य अर्थात् बहुत ही कठिनाई से कुछ जानने समझने योग्य है। फिर भी इतना तो सरल है कि कर्मों का फल निश्चित रूप से मिलेगा। कब और कैसे? यह ईश्वरीय व्यवस्था है।

हमारा विचार है कि इतने प्रमाणों के उपरान्त यह अवश्य ही समझ में आ गया होगा कि कर्मफल से बचने का कोई मार्ग नहीं है। अब इसे विज्ञान की दृष्टि से भी समझ लीजिये। विज्ञान का नियम है कि Every Action has an equal and opposite Reaction. अर्थात् प्रत्येक क्रिया की समान एवं विपरीत प्रतिक्रिया होती है। इससे भी सिद्ध है कि प्रत्येक क्रिया अर्थात् कर्म की प्रतिक्रिया अर्थात् फल मिलेगा। विपरीत का अर्थ कर्मफल व्यवस्था में 'करने' के स्थान पर 'भोगने' 'देने' के स्थान पर 'लेने' में आयेगा। इससे विज्ञान के अथवा दर्शन के किसी नियम पर कोई दोष नहीं आता। करने का विपरीत भोगना ही तो हुआ और किसी को कष्ट, दुःख आदि देने का विपरीत लेना अर्थात् वह भी भोगना ही हुआ।

आश्चर्य है कि इतनी प्रबल व्यवस्था के होते हुए भी स्वार्थ एवं अज्ञान के वशीभूत मनुष्य कर्म करते हुए यह

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

आदर्श

प्रबंध शास्त्री के रूप में श्रीकृष्ण

❐डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी जवाहर नवोदय विद्यालय,
खुंगा-कोठी, जींद-१२६११० (हरियाणा) ०९९९६३८८१६९

श्रीकृष्ण को ईश्वर व गीता को केवल पाठ करने की एक पुस्तक मानकर हम अपने आप को कृष्ण और गीता से दूर कर लेते हैं। हम कृष्ण को एक विचारक व प्रबंधशास्त्री के रूप में देखकर विचार करें, उनके दृष्टिकोण को समझने व गीता को एक व्यावहारिक ग्रन्थ मानकर अपने जीवन में ढालने के प्रयास करें तो व्यक्ति व समष्टि सभी को शान्ति व आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।

जब ज्ञान आचरण के स्थान पर विद्वता-प्रदर्शन का प्रतीक बन जाय तो शान्ति के स्थान पर अशान्ति मिलती है, जब धर्म आचरण के स्थान पर कर्मकांड तक सीमित हो जाय, आस्था आडम्बर व आतंक का पर्याय प्रतीत होने लगे तो धर्म आतंक पैदा करने का साधन बनता है, जब परिवार भावना के स्थान पर नि:संग बुद्धि से संचालित होकर स्वार्थ-सिद्धि की खींचतान का युद्धक्षेत्र बन जाये तो परिवार संरक्षण न देकर शोषण का स्थान बनकर असुरक्षा की भावना जगाता है, तब व्यष्टि या समष्टि को आनन्द व शान्ति कैसे मिल सकते हैं? ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि हम ज्ञान व धर्म की अवधारणाओं पर अपने प्राचीन ज्ञान व धर्म के प्रकाश में पुनर्विचार करें। इस पुनर्विचार के लिए गीता हमारा आधार सिद्ध हो सकती है।

विचार करें तो वर्तमान में ज्ञान का कोई भी क्षेत्र नवीन प्रतीत नहीं होता। वर्तमान में आधुनिकता के नाम पर अपनाये जाने वाली परंपरायें भी वैदिक युग में बुराइयों के रूप में ही सही, देखने को अवश्य मिल जाती हैं। यदि विज्ञान, प्रबंधन व सूचना प्रोद्यौगिकी के बारे में भी विचार किया जाय तो हमने भले ही उन्हें ईश्वरीय चमत्कार मानकर कथाओं तक सीमित कर दिया हो, कथाओं में ही सही ऐसे उपकरणों की चर्चा मिल ही जाती है, जो वर्तमान में विज्ञान ने संभव बनाये हैं। प्रबंधन की बात करें तो भारतीय ग्रंथों में प्रबंधन के सिद्धान्त कूट-कूट कर भरे पड़े हैं। भारतीय आश्रम व्यवस्था जीवन प्रबंधन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। वर्तमान में प्रबंध-शास्त्री बड़े-बड़े शोध ग्रंथों का प्रकाशन करते हैं किन्तु व्यक्ति व समाज शान्ति व आनन्द से कोसों दूर हैं। इसका कारण है हम संपूर्ण को समझे बिना, अंश को ही संपूर्ण मान बैठते हैं। उपलब्ध ज्ञान के भंडार को छोड़कर छोटे-छोटे अंशों को प्राप्त करने के लिए स्वार्थवश लगे रहते हैं और अपने अहंकार का पोषण करते हैं। हम जो भी ज्ञान प्राप्त करने की बात करते हैं, वस्तुतः वह पहले से ही उपलब्ध है। हमने उसे अप्रासंगिक मानकर छोड़ दिया है। जबकि हमें ज्ञान की खोज करने की आवश्यकता ही नहीं है, उसका अनुशीलन व अनुप्रयोग कर समाज के लिए उपादेयता सिद्ध करने की आवश्यकता है। कौन प्रबंध शास्त्री श्रीकृष्ण के प्रबंधन के सामने ठहर सकता है? ज्ञान का कौन सा ऐसा क्षेत्र है जिसकी चर्चा गीता में नहीं मिलती? विज्ञान, सूचना प्रोद्यौगिकी, प्रबंधन व धर्म के विषय में श्रीमद्भगवद्गीता अकेले ही संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। हमने कालान्तर में इसे एक ध ार्मिक ग्रन्थ तक सीमित करके इसकी उपादेयता से अपने आप को वंचित कर लिया। गीता केवल आदर्श ही नहीं है, व्यावहारिक भी है। उसके अनुसार व्यक्ति व व्यष्टि का प्रबंधन किया जाय तो विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान संभव है।

गीता के रूप में जीवन प्रबंधन का विशद ज्ञान देने वाले समसामयिक प्रबंधक व युग प्रवर्तक प्रबंधशास्त्री श्रीकृष्ण को हमने चमत्कारों से जोड़कर अप्रासंगिक बना दिया। जब हम किसी व्यक्ति को विशेष स्थान दे देते हैं, तभी हम उसके द्वारा दिखाए गये रास्ते के अनुकरण से अपने आप को वंचित कर लेते हैं। हम भारतीयों की सबसे बड़ी कमजोरी यही है जिसके कारण हम वैयक्तिक रूप से अपनी क्षमताओं का सम्पूर्णता के साथ उपयोग नहीं कर पाते। हम जिसको भी कुछ महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करते पाते हैं, हम तुरन्त उसे विशिष्ट व महान घोषित कर देते हैं, अवतारों में गिनती कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उसके द्वारा किए गये कार्यों को हम विशिष्ट मानकर स्वयं अपने द्वारा करणीय नहीं मानते। उस महापुरुष द्वारा दिखाया गया मार्ग हमारे लिए अनुकरणीय नहीं रह जाता, क्योंकि वह तो महान पुरुष या विशिष्ट पुरुष या अवतार था। उसके द्वारा किए गये कार्य को हम कैसे कर सकते हैं भला! और इस प्रकार हम उसके चित्र के सामने माल्यार्पण

करके अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। यही हमारा दुर्भाग्य बन जाता है। यही प्रबंध शास्त्री श्रीकृष्ण के संबंध में हुआ। उनके साथ हमने ढेरों किम्वदंतियाँ व चमत्कार जोड़कर अपनी पहुँच से दूर कर दिया।

अपने आदर्श के कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करना ही हमारे जीवन का ध्येय होना चाहिए। यदि हम श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व व कृतित्व को देखें तो उनके समकक्ष कोई भी प्रबंधक या प्रबंधशास्त्री नहीं ठहरता। आओ हम श्री कृष्ण को एक प्रबंधशास्त्री के रूप में देखते हुए उनसे प्रबंधन की शिक्षा ग्रहण करें।

श्रीकृष्ण ने कारागार में जन्म लेकर और एक ग्वाले के घर पलकर अपने प्रबंधन कौशल के बल पर ही सम्पूर्ण ब्रज क्षेत्र को संगठित करने में सफलता हासिल की। श्रीकृष्ण ने अपने प्रबंधन कौशल का प्रयोग करके ही कंस के राज्य में रहते हुए भी न केवल समस्त संसाधनों को एकत्रित किया वरन् समस्त कौशलों को सीखते हुए द्रुतगति से कंस की शक्ति को कमजोर करते रहे। मथुरा पहुँचने से पूर्व ही श्रीकृष्ण कंस के काफी योद्धाओं को मार चुके थे। यही नहीं ब्रज क्षेत्र में रहते हुए भी मथुरा में अपने समर्थक व सहयोगी तैयार कर चुके थे। श्रीकृष्ण का प्रबंधन कौशल ही था, जो बिना गद्दी पर बैठे महाभारत जैसे युद्ध के सूत्रधार बने।

गीता जैसे प्रबंधन ग्रन्थ का सूत्रपात भी युद्धक्षेत्र में ही हुआ। गीता अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता जो महाभारत के अंग के रूप में मिलती है, श्रीकृष्ण की प्रबंधशास्त्र पर एक विश्व प्रसिद्ध कृति है। यह अलग बात है कि इसका रचयिता महर्षि वेदव्यास को माना जाता है और इसे एक धार्मिक ग्रन्थ मानकर इसकी उपादेयता को सीमित कर दिया गया है। व्यास इसके लेखक हो सकते हैं किंतु निर्विवाद रूप से गीता को श्रीकृष्ण के उपदेशों का सार माना जाता है। प्रबंधन ग्रन्थ गीता के रचनाकाल के बारे में मतभेद हो सकते हैं किन्तु इसकी उपादेयता के बारे में किसी प्रकार के विवाद की गुंजाइश नहीं है। इसकी रचना हुए इतना समय बीत चुका है, इसके इतने संस्करण निकल चुके हैं कि इसके मूल रूप के विषय में संदेह हो सकता है। वास्तविकता यह है कि जो रचना जितनी पुरानी होती है, जिसको जितने विद्वानों द्वारा अनूदित व प्रस्तुत किया गया होता है, उसमें इतने ही परिवर्तन होते जाते हैं। उसमें परवर्ती विद्वानों के विचार भी सम्मिलित होते जाते हैं। अतः हो सकता है कि उसके मूल में कुछ परिवर्धन हुआ हो, किन्तु उसके बावजूद हम विवेकपूर्वक उसका प्रयोग करें तो उसकी उपादेयता समय के साथ परिवर्तित भले ही हो, कम नहीं होती। गीता भले ही महाभारत का अंग हो किन्तु इसे महाभारत से भी अधिक लोकप्रिय प्रबंधनग्रन्थ कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

गीता का प्रभाव भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में है। विश्व की अधिकांश प्रमुख भाषाओं के साहित्य को भी इसने प्रभावित किया है। गीता के महत्व को इसी बात से जाना जा सकता है कि सामान्य जनता या धार्मिक नेता ही नहीं माननीय न्यायाधीश महोदय ने भी गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने का विचार रखा है। गीता है ही एक अद्‌भुत ग्रंथ। श्रीकृष्ण जैसे प्रबंधशास्त्री का शोध-ग्रंथ गीता देशकाल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए आज भी सर्वोत्तम ग्रंथों में सम्मिलित है।

गीता के बारे में कुछ परिवारों में मैंने कहते सुना है कि यह गृहस्थ को नहीं पढ़नी चाहिए क्योंकि इससे घर में कलह बढ़ता है। यह किंवदन्ती इस बात को ध्यान में रखकर बनी होगी कि गीता के ज्ञान को आत्मसात् करने के बाद ही अर्जुन युद्ध करने को प्रस्तुत हुआ। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इससे वैराग्य का जन्म होता है। अतः अपने बच्चों को इससे दूर रखने के प्रयत्न करते हैं। इसको दूसरे दृष्टिकोण से विचार करके देखना उपयुक्त होगा। अर्जुन जीवन-संग्राम से भाग रहा था, उसके अन्दर नैराश्य व पलायनवादी प्रवृत्ति जन्म ले चुकी थी, वह मजबूरी में वैराग्य की और उन्मुख हो रहा था। प्रबंधशास्त्री श्रीकृष्ण द्वारा प्रस्तुत गीता ही वह ज्ञान है जिसकी बदौलत अर्जुन अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ा, और उसने न केवल कुशल गृहस्थ के रूप में अपनी भूमिकाओं का निर्वाह किया वरन् एक साम्राज्य का आधार स्तंभ भी बना। अतः गीता गृहस्थ के लिए ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए न केवल पठनीय है वरन् मननीय व अनुकरणीय भी है।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि धर्म ही सबसे विवादास्पद अवधारणा बनता जा रहा है। ईश्वर के नाम पर क्या-क्या नहीं हो रहा है? अनेक ईश्वरों का सृजन मानव द्वारा प्रतिदिन किया जा रहा है। ईश्वर के नाम पर स्वार्थ सिद्धि व मार-काट देखी जा सकती है। मन्दिर, मस्जिद व गिरिजाघर झगड़ों के केन्द्र दिखाई देने लगे हैं। इस संबन्ध में हम अपने वैदिक ज्ञान की ओर देखें। हमारे यहाँ तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की बात मिलती है। मेरे विचार में यह उस समय प्रचलन में आया होगा, जबकि विश्व की जनसंख्या ही तैंतीस करोड़ रही होगी। हमारे दर्शन में प्रत्येक पुरुष देव व प्रत्येक स्त्री देवी का रूप मानी जाती है। इसीलिए तो गीता में कहा गया है-

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

वेद-ज्योति

❐डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ **drvivekarya@yahoo.com**

उत्तम बुद्धि से जीवन में सफलता मिलती है।

एक राजा था। वह बेहद न्यायप्रिय, दयालु और विनम्र था। उसके तीन बेटे थे। जब राजा बूढ़ा हुआ तो उसने किसी एक बेटे को राजगद्दी सौंपने का निर्णय किया। इसके लिए उसने तीनों की परीक्षा लेनी चाही। उसने राजकुमारों को अपने पास बुलाकर कहा, 'मैं आप तीनों को एक छोटा सा काम सौंप रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप इस काम को अपने सर्वश्रेष्ठ तरीके से करने की कोशिश करेंगे।' राजा के कहने पर राजकुमारों ने हाथ जोड़कर कहा, 'पिताजी, आप आदेश दीजिए। हम अपनी ओर से कार्य को सर्वश्रेष्ठ तरीके से करने का भरपूर प्रयास करेंगे।' राजा ने प्रसन्न होकर उनको कुछ स्वर्ण मुद्राएं दीं और कहा कि इन मुद्राओं से कोई ऐसी वस्तु खरीद कर लाओ जिससे पूरा कमरा भर जाए और वह वस्तु काम में आने वाली भी हो।

तीनों राजकुमार स्वर्ण मुद्राएं लेकर अलग-अलग दिशाओं में चल पड़े। बड़ा राजकुमार बड़ी देर तक माथापच्ची करता रहा। उसने सोचा कि इसके लिए रूई उपयुक्त रहेगी। उसने उन स्वर्ण मुद्राओं से काफी सारी रूई खरीद कर कमरे में भर दी और सोचा कि इससे कमरा भी भर गया और रूई बाद में रजाई भरने के काम आ जाएगी।

मंझले राजकुमार ने ढेर सारी घास से कमरा भर दिया। उसे लगा कि बाद में घास गाय व घोड़ों के खाने के काम आ जाएगी।

उधर छोटे राजकुमार ने तीन दीये खरीदे। पहला दीया उसने कमरे में जलाकर रख दिया। इससे पूरे कमरे में रोशनी हो गई। दूसरा दीया अंधेरे चौराहे पर रख दिया जिससे वहाँ भी रोशनी हो गई और तीसरा दीया उसने अंधेरी चौखट पर रख दिया जिससे वह हिस्सा भी जगमगा उठा। बची हुई स्वर्ण मुद्राओं से उसने गरीबों को भोजन करा दिया।

राजा ने तीनों राजकुमारों की वस्तुओं का निरीक्षण किया। छोटे राजकुमार के बुद्धिपूर्वक निर्णय को देखकर वह अत्यंत प्रभावित हुआ और उसे ही राजगद्दी सौंप दी।

व्यक्ति की योग्यता उसकी बुद्धि और वृत्तियों से प्रदर्शित होती है। वेद में बुद्धि की उत्तम वृतियों के लिए अनेक मन्त्रों में प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद ६/४७/१० में परम ऐश्वर्यवान परमेश्वर से पांच प्रकार की इच्छा पूर्ण करने की प्रार्थना की गई है। प्रथम सुख, द्वितीय दीर्घ जीवन, तृतीय तीक्ष्ण बुद्धि, चतुर्थ परमात्मा से प्रेम और पाँचवां विद्वानों का संग। मानव देह दुर्लभ है। इसे व्यसन आदि से निकृष्ट बनाना मूर्खता है। श्रेष्ठ कर्म करने से सुख की प्राप्ति होगी। सुख के भोग के लिए दीर्घ जीवन की आवश्यकता है। दीर्घ जीवन को उत्तम प्रकार से जीने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है। इसी बुद्धि से मनुष्य भोग विलास में लगकर जीवन नष्ट करता है। इसी बुद्धि को मनुष्य श्रेष्ठ आचरण में लगाकर जीवन को सफल बनाता है। बुद्धि से चिंतन-मनन कर मानव परमेश्वर में ध्यान लगाता है। परमात्मा का ध्यान करने के लिए श्रेष्ठ विद्वानों का संग और मार्गदर्शन आवश्यक है। इसीलिए बुद्धि की उत्तम वृत्तियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई हैं। उत्तम वृत्तियों से ही जीवन में सफलता मिलती है।

जीवन में सुख का आधार क्या है?

एक बार एक महात्मा ने अपने शिष्यों को आदेश किया कि वे कल से प्रवचन में आते समय अपने साथ एक थैली में बड़े आलू लेकर आयें, उन आलुओं पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होना चाहिये जिससे वे ईर्ष्या, द्वेष आदि करते हैं। जो व्यक्ति जितने व्यक्तियों से घृणा करता हो, वह उतने आलू लेकर आये।

अगले दिन सभी लोग आलू लेकर आये, किसी के पास चार आलू थे, किसी के पास छः या आठ और प्रत्येक आलू पर उस व्यक्ति का नाम लिखा था जिससे वे नफरत करते थे। अब महात्मा जी ने कहा कि अगले सात दिनों तक

ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें, जहाँ भी जायें, खाते-पीते, सोते-जागते, ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें। शिष्यों को कुछ समझ में नहीं आया कि महात्मा जी क्या चाहते हैं, लेकिन महात्मा के आदेश का पालन उन्होंने अक्षरशः किया। दो-तीन दिनों के बाद ही शिष्यों ने आपस में एक दूसरे से शिकायत करना शुरू किया, जिनके आलू ज्यादा थे, वे बड़े कष्ट में थे। जैसे-तैसे उन्होंने सात दिन बिताये और महात्मा की शरण ली। महात्मा ने कहा- अब अपने-अपने आलू की थैलियाँ निकालकर रख दें, शिष्यों ने चैन की साँस ली।

महात्माजी ने पूछा- सात दिनों का अनुभव कैसा रहा? शिष्यों ने महात्मा से अपनी आपबीती सुनाई, अपने कष्टों का विवरण दिया, आलुओं की बदबू से होने वाली परेशानी के बारे में बताया, सभी ने कहा कि बड़ा हल्का महसूस हो रहा है। महात्मा ने कहा- यह अनुभव मैंने आपको एक शिक्षा देने के लिये दिया था। जब मात्र सात दिनों में ही आपको ये आलू बोझ लगने लगे, तब सोचिये कि आप जिन व्यक्तियों से ईर्ष्या या द्वेष करते हैं उनका कितना बोझ आपके मन पर होता होगा! वह बोझ आप लोग तमाम जिन्दगी ढ़ोते रहते हैं।

सोचिये कि आपके मन और दिमाग की इस ईर्ष्या के बोझ से क्या हालत होती होगी? यह ईर्ष्या तुम्हारे मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, उनके कारण तुम्हारे मन में भी बदबू भर जाती है, ठीक उन आलुओं की तरह। इसलिये अपने मन से इन भावनाओं को निकाल दो। शिष्यों ने अपने मन से ईर्ष्या, द्वेष रूपी पाप विचार को निकाल दिया। वे प्रसन्नचित्त होकर आनंद में रहने लगे। आज समाज में व्यक्ति मन में एकत्र पाप विचारों से सर्वाधिक दुखी है। दूसरे से ईर्ष्या व द्वेष करते करते उसका आंतरिक वातावरण प्रदूषित हो गया है।

वेद भगवान बड़े सुन्दर शब्दों में मन से ईर्ष्या, द्वेष रूपी पाप विचारों को दूर करने का सन्देश देते हैं। अथर्ववेद ६/४५/१ में लिखा है- ओ मन के पाप विचार! तू परे चला जा, दूर हो जा। क्योंकि तू बुरी बातों को पसंद करता है। तू पृथक् (अलग) हो जा, चला जा। मैं तुझे नहीं चाहता। मेरा मन तुझ पाप की ओर न जाकर श्रेष्ठ कार्यों में रहे।

मन से पाप कर्म जैसे ईर्ष्या, द्वेष आदि न करने का संकल्प करके हम अनेक प्रकार के दुःखों से बच सकते हैं।

ईश्वर को कहाँ खोजे?

एक प्रसिद्ध संत थे। उनके सदाचारी जीवन और आचरण से सामान्य जन अत्यंत प्रभावित होते और उनके सत्संग से अनेक सांसारिक प्राणियों को प्रेरणा मिलती। सृष्टि का अटल नियम है। जिसका जन्म हुआ उसकी मृत्यु भी होगी। वृद्ध होने पर संत जी का भी अंतिम समय आ गया। उन्हें मृत शैया पर देखकर उनके भक्त विलाप करने लगे। उन्होंने विलाप करते हुए शिष्यों को अंदर बुलाकर उनसे रोने का कारण पूछा। शिष्य बोले- आप नहीं रहेंगे तो हमें ज्ञान का प्रकाश कौन दिखलायेगा!

संत जी ने उत्तर दिया, 'प्यारे शिष्यो, प्रकाश तो आपके भीतर ही है। उसे केवल खोजने की आवश्यकता है। जो अज्ञानी हैं वे उसे संसार में तीर्थों, नदियों, मंदिरों, मस्जिदों आदि में खोजते हैं। अंत में वे सभी निराश होते हैं। इसके विपरीत मन, वाणी और कर्म से एकनिष्ठ होकर निरंतर तप और साधना करने वाले का अन्तःकरण दीप्त हो उठता है। इसलिए ज्ञान चाहते हो तो ज्ञान देने वाले को अपने भीतर ही खोजो। वह परमात्मा हमारे अंदर जीवात्मा में ही विराजमान है। केवल उसे खोजने का पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है।

वेद में इस सुन्दर सन्देश को हमारे शरीर के वर्णन के माध्यम से बताया गया है। अथर्ववेद के १०/२/३१ मंत्र में इस शरीर को ८ चक्र और ९ द्वारों वाली देवों की नगरी कहा गया है। इस शरीर के भीतर अनेक बलों से युक्त तीन प्रकार की गति (ज्ञान, कर्म और उपासना) करने वाला चेतन आत्मा है। इस जीवात्मा के भीतर और बाहर परमात्मा है और उसी परमात्मा को योगी जन साक्षात् करते हैं। वेद दीर्घ जीवन प्राप्त करके सुखपूर्वक रहने की प्रेरणा देते हैं। वेद शरीर के माध्यम से अभ्युदय (लोक व्यवहार) एवं निःश्रेयस् (परलौकिक आनन्द) की प्राप्ति के लिए अंतर्मन में स्थित ईश्वर का ध्यान करने की प्रेरणा देते हैं।

आर्यवन में यज्ञ एवं ध्यान शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम में ०३ से ०५ अक्टूबर २०१५ तक यज्ञ एवं ध्यान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें यज्ञ की परिभाषा, महत्व, लाभ, आवश्यकता, मंत्रों का शुद्ध उच्चारण तथा ईश्वर का ध्यान कैसे करें, ईश्वर प्रणिधान, ध्यान की वास्तविकता, ध्यान में मन न लगना आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रवचनों का भी विशेष लाभ मिलेगा।

नियमावली व प्रवेश हेतु सम्पर्क करें-

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड,
पो०-सागपुर, जिला - साबरकांठा गुजरात- 383307
दूरभाष ०२७७०-२८७४१७, ९४२७०५९५५०
www.vaanaprastharojad.org

कर्ण कुन्ती पुत्र कैसे बना?

राजेशार्य आट्टा, ११६६, कच्चा किला, साढौरा, यमुनानगर, हरि०

क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता की सन्तान का नाम सूत है। इसीलिए कर्ण को सूत्र-पुत्र कहा जाता है। यह असम्भव भी नहीं है, पर कुंवारी कुन्ती से सूर्यपुत्र का उत्पन्न होना तो किसी तरह भी उचित व सम्भव नहीं है।

भोले भण्डारियों के वरदान और शाप ने धरती के इतिहास को आकाश में उड़ा दिया। ऐसी ऐसी तुकबन्दी करके इतिहास को काल्पनिक बनाने वाले तथाकथित महापण्डितों की एक और करतूत देखिये-कहते हैं कि कुंवारी कुन्ती की सेवा से प्रसन्न होकर दुर्वासा ऋषि ने कुन्ती को ऐसा मंत्र दिया कि उसके जप से वह इच्छित देवता को बुला सकती थी। कुन्ती ने मंत्र की सत्यता जाँचने के लिए सूर्य देवता का आह्वान किया। सूर्य ने आकर तत्काल कुन्ती (कन्या) को पुत्र का वरदान (गर्भस्थापन द्वारा) दे दिया। इसे आप वरदान कहेंगे या मुसीबत। जिसे किसी को बता न सके, दिखा न सके और ऊपर पुत्र-त्याग का पाप भी करना पड़ा। जीवन भर उसे अपना न कह सकी, ऐसी बला को भी कोई वरदान कहे, तो वह उस देवता (सूर्य) से बढ़कर मूर्ख है।

क्या सूर्य को पता नहीं था कि कुन्ती अभी कन्या है और कन्या को पुत्र प्रदान करने से समाज में उसकी क्या दुर्दशा होगी? और कर्ण कुन्ती के लिए कहाँ काम आया? उल्टा, दुर्योधन के साथ लगकर उसके पुत्रों को कष्ट ही दिया। उसी के बल पर दुर्योधन ने महाभारत रचा और देश का विनाश किया।

वास्तविकता तो यही है कि बहुत कुछ मिलावट और हटावट में कर्ण के वास्तविक माता-पिता का नाम महाभारत से गायब हो गया। यदि विद्वान परिश्रम करें, तो पुराण आदि अन्य ग्रंथों की सहायता से सत्य खोजा भी जा सकता है, पर यह सत्य है कि कर्ण को कुन्ती पुत्र सबसे पहले श्रीकृष्ण ने कहा था और वह भी उस समय, जब शान्ति के सभी मार्ग बन्द हो गये थे। युद्ध के विनाश को टालने के लिए नीतिनिपुण बुद्धिमान् मानव हितैषी कृष्ण को यही अंतिम उपाय लगा कि कर्ण को पाण्डवों का बड़ा भाई बताकर उसे दुर्योधन से अलग किया जाए। यह उसकी भेद नीति थी, जिसका वर्णन उसने हस्तिनापुर से असफल लौटकर पाण्डवों की सभा में किया-मैंने भाइयों में प्रेम बना रहे-इस दृष्टि से पहले तो साम का ही प्रयोग किया था। किन्तु जब वे साम नीति से नहीं माने तो भेद का भी प्रयोग किया। (उद्योग पर्व, १५०-९०)

कर्ण ने जब कृष्ण की बात न मानकर दुर्योधन के प्रति मित्रता के आदर्श की बात कही थी, तो उस समय कृष्ण ने हँसते हुए कहा था-

अपि त्वां न लभेत् कर्ण राज्यलम्भोपपादनम्।
मया दत्तं हि पृथिवीं न प्रशासितुमिच्छसि।। (उद्योग० १४२-२)

''कर्ण ! तो क्या तुम्हें यह राज्य प्राप्ति का उपाय भी मंजूर नहीं है? तुम मेरे द्वारा दी गई पृथ्वी का भी शासन नहीं करना चाहते।''

पाठक समझ गये होंगे कि कर्ण को कुन्ती पुत्र बताने के पीछे कर्ण को दुर्योधन से अलग करना ही उद्देश्य था और उसकी राज्यलिप्सा को शान्त करने के लिए ही उसे पाण्डवों का राज्य सौंपने व युधिष्ठिर को युवराज बनाने की बात कही थी। नहीं तो युवराज पुत्र ही होता है, भाई नहीं।

कुन्ती ने कर्ण को पहली बार अपना पुत्र तब कहा, जब युद्ध निश्चित हो गया और कृष्ण कर्ण को फोड़ने में असमर्थ हो गये। ऐसे समय में और वह भी एकान्त में कर्ण को अपना पुत्र बताकर उसे पाण्डवों से मिलने के लिए कहना कुन्ती के स्वार्थ को दर्शा रहा है अर्थात् यह सीधे-सीधे राजनीति थी। माँ कुन्ती पहले तो कर्ण-अर्जुन की बलराम-कृष्ण जैसी जोड़ी बनाने के लिए कहती है। बाद में अर्जुन को छोड़कर शेष चारों भाईयों को जीवन रक्षा (अभयदान) का वचन लेकर अर्जुन या कर्ण में से एक (कोई भी जीवित रहे) पर सन्तुष्ट होकर चली जाती है और जाते समय कहती है-

त्वया चतुर्णां भ्रातृणामभयं शत्रुकर्शन।
दत्तं तत् प्रतिजानीहि संगरप्रतिमोचनम्।। (उद्योग १४६-२६)

''हे शत्रु सूदन! तूने अपने चार भाइयों को अभयदान दिया है। युद्ध के समय इस बात को भूल मत जाना। दृढ़ प्रतिज्ञ रहना।'' कर्ण के तथास्तु कहने पर कुन्ती वापस लौट

गई। वह आई भी तो इसीलिए थी। चार भाई बचा लिये; अर्जुन के पराक्रम पर उसे विश्वास था और कर्ण की उसे चिन्ता नहीं थी, क्योंकि वह उसका बेटा था ही नहीं।

सूर्य के वरदान की कहानी घड़ने वालों ने माँ कुन्ती के मुख से दूसरों (युधिष्ठिर आदि) के सामने केवल एक बार कर्ण को अपना पुत्र कहलवाया है और वह भी उसकी मृत्यु (महाभारत युद्ध) के बाद जलांजलि देते समय। यह श्राद्ध तर्पण की अवैदिक परम्परा है, जो बाद में जोड़ी गई है। वैसे भी उस समय कर्ण को अपना बेटा बताने का माँ कुन्ती को कोई भी लाभ नहीं था, क्योंकि माँ कुन्ती को पता था कि स्वयं को भाई का हत्यारा जानकर युधिष्ठिर को कितना दु:ख होगा। और जिस पाप को माँ ने जीवन भर छुपाया हो, उसे अब प्रकट कर बेटों में व समाज में कलंकित होने से कोई लाभ भी तो नहीं था।

श्री यशपाल शास्त्री (दिल्ली) ने लिखा है कि कर्ण जन्म से ही सूत पुत्र था। वह गंगा में बहता हुआ नहीं मिला था। उसका कुन्ती से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसने पिता के व्यवसाय को न अपनाकर शस्त्र विद्या सीखी थी और सूर्य के समान प्रतापी होने के कारण ही उसे सूर्य-पुत्र तथा वैकर्तन कहा जाता था, बेटा होने के कारण नहीं। कर्ण अपने पिता का अकेला पुत्र नहीं था। उसके और भी कई भाई थे और वे भी शस्त्र-विद्या में कुशल थे। वे भी महाभारत में लड़ते हुए मारे गए थे।

श्री यशपाल आर्य (देहरादून) ने लिखा है कि सूर्य का धरती पर आना; कुन्ती का गर्भधारण करना और तत्काल कवच-कुण्डल सहित कर्ण का जन्म होना; नवजात शिशु का नदी की लहरों में सुरक्षित रहना आदि असम्भव बातें हैं। रंगभूमि में अर्जुन के प्रदर्शन के समय दुर्योधन द्वारा कर्ण को अंग देश का राजा बनाया जाना असम्भव है। क्योंकि दुर्योधन उस समय राजा नहीं था। वह भी युधिष्ठिर आदि की तरह राजकुमार था और शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

कर्ण तो जन्म से ही अंग देश का राजकुमार था। मगध नरेश जरासंध ने कभी अंग देश के कुछ हिस्से पर अधिकार कर लिया था, कर्ण ने उससे युद्ध कर अंग देश की राजधानी मालिनी वापस ले ली थी। (शा० ५-६, ७)

गीताप्रेस गोरखपुर से छपे हरिवंश पुराण (महाभारत का खिल भाग) के विष्णु खण्ड अध्याय ३१ के आधार पर लेखक ने लिखा है कि अंग राज के वंश में वृहन्मना हुए। उनकी दो रानियों यशो देवी और सत्या से क्रमश: जयद्रथ व विजय हुए। जयद्रथ का पौत्र विश्वजीत ही कर्ण का पिता था। विजय के वंशज सत्यकर्मा के पुत्र अधिरथ सूत ने कर्ण को गोद लिया था। क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता की सन्तान का नाम सूत है। इसीलिए कर्ण को सूत्र-पुत्र कहा जाता है। यह असम्भव भी नहीं है, पर कुंवारी कुन्ती से सूर्यपुत्र का उत्पन्न होना तो किसी तरह भी उचित व सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त विद्वानों का प्रयास सत्य की तरफ बढ़ने का है। भविष्य में कोई और भी खोज हो सकती है, पर उसकी दिशा यही होनी चाहिए। महाभारत में कर्ण को कुंती व सूर्य का पुत्र चार बार लिखा गया है-आदिपर्व में, दो बार उद्योग पर्व में व स्त्रीपर्व में। आदिपर्व में महाभारत के सभी मुख्य पात्रों को देवताओं का अंश अवतार और कौरवों को राक्षस (रावण के वंश में पैदा हुए) लिखा है। इस प्रकार धरती के इतिहास को आसमानी (काल्पनिक) बनाया गया है। यह पुराणकाल (बुद्ध व गुप्त काल के बीच) की कल्पना है, महर्षि वेदव्यास की रचना नहीं। उद्योग पर्व में (ऊपर वर्णित) कूटनीति भी हो सकती है या ये प्रसंग प्रक्षिप्त भी हो सकते हैं। क्योंकि कुन्ती ने वह घटना किसी को नहीं बताई थी, फिर श्री कृष्ण को कैसे पता चली और कर्ण ने भी यह सुनकर आश्चर्य प्रकट नहीं किया, अपितु कहा कि मुझे इन सब बातों का पता है कि कुन्ती ने कन्या अवस्था में सूर्यदेव के द्वारा मुझे गर्भ में धारण किया था और फिर उन्हीं के कहने से त्याग दिया था।' तो कर्ण को इन बातो का कैसे पता चला? फिर कर्ण ने यह रहस्य रंगभूमि में अथवा बाद में भीम-अर्जुन द्वारा अपमानित होने पर उद्घाटित क्यों नहीं किया?

जब कुन्ती कर्ण से मिलने गई और वही बात दोहराई, तो कर्ण ने क्यों नहीं कहा कि मुझे सब पता है? वहाँ कुन्ती को यह कहने की आवश्यकता क्यों कि बेटा! अपने भाइयों को न पहचानने के कारण तुम जो मोहवश धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ रहते हो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है! उसी समय कुन्ती की बात पर मोहर लगाने के लिए सूर्यमण्डल से आकाशवाणी क्यों करवाई गई? आप स्वयं सोचिये, क्या पृथ्वी से १३ लाख गुणा बड़ा और १५ करोड़ कि०मी० दूर स्थित सूर्य ही धरती पर आया था और कुन्ती ने उसके तेज (गर्मी) को सहन कर लिया?

स्त्रीपर्व में कुन्ती के मुख से वही शब्द बुलवाये गये हैं। मृतक (कर्ण) के लिए जलांजलि देने की प्रथा महाभारत काल में नहीं थी। कहानी घड़ने वालों ने अपने काल की परम्परा को अतीत पर थोंपा है।

अत: कर्ण का कुन्ती से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह सूत-पुत्र था। सूत सारथी भी हो सकता है और अंग देश का अधिरथ सूत भी। आशा है वैदिक विद्वान इस विषय पर अपनी लेखनी चलाएँगे।

हमारा संविधान और राजभाषा हिन्दी

❐नरेश सिहाग एडवोकेट,सम्पादक, बोहल शोध मञ्जूषा
गुगन निवास, २६ पटेल नगर, भिवानी- १२७०२१ चलभाष : ०९४६६५३२१५२, ०९२५५११५१७५

आज के समय में विश्व का शायद ही कोई ऐसा देश होगा जिसका अपना संविधान न हो। प्रत्येक देश का अपना संविधान होता है, जिसके अनुसार उस देश का शासन संचालित किया जाता है। हमारे देश के संविधान का निर्माण कैबिनेट मिशन के प्रतिवेदन के आधार पर किया गया है। हमारा संविधान ऐसा दस्तावेज है, जिसे भारतीय प्रजातंत्र का मौलिक ग्रन्थ कहा जा सकता है। हमारे संविधान में भारत वर्ष में निवास करने वाले व्यक्तियों की नागरिकता, मूल अधिकार-कर्त्तव्यों के साथ देश के शासन को संचालित करने के लिए नीति निदेशक तत्वों और केन्द्र तथा राज्यों में गठित की जाने वाले विधान मण्डलों तथा सरकारों, केन्द्र- राज्य सम्बंध, संघ कार्यपालिका, राज्य कार्यपालिका, संघ तथा राज्यों की न्याय पालिका, स्थानीय निकाय आदि के सम्बंध में व्यापक प्रावधान किया गया है। हमारी राजभाषा हिन्दी के लिए हमारे संविधान में बहुत से प्रावधान संविधान सभा ने किये हैं।

संविधान की उद्देशिकाः-

हम, भारत के लोग, भारत को एक 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य'[१] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को-
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय; विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता; प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और (राष्ट्र की एकता और अखण्डता) [२] सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख २६ नवम्बर १९४९ ई० (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।[३]
संघ- भारत अर्थात् इण्डिया, राज्यों का संघ होगा।[४]

प्रशासन की भाषा राजभाषा कहलाती है। राजभाषा का सामान्य अर्थ है राजकाज चलाने की भाषा अर्थात् भाषा का वह रूप जिसके द्वारा राजकीय कार्य चलाने में सुविधा हो। केन्द्र की राजभाषा को संघ भाषा भी कहा जाता है। स्वतंत्र भारत में नए संविधान की रचना तथा भारत के गणराज्य बन जाने पर भारतीय संविधान के लागू होने से पूर्व 'राष्ट्रभाषा' शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में होता था, जिस अर्थ में आज 'राजभाषा' शब्द का प्रयोग होता है। अर्थात् संविधान में स्वीकृति के बाद इसका प्रयोग आरम्भ हुआ।[५] वर्तमान समय में सम्पूर्ण देश की प्रायः ८५ प्रतिशत से अधिक जनता पूर्णरूप से या टूटी-फूटी हिन्दी समझ और बोल देती है। (मैं इस दावे की पुष्टि व्यक्तिगत रूप से कर सकता हूँ क्योंकि गुगनराम सोसायटी बोहल, भिवानी वर्ष २००६ से स्मृतिशेष चौधरी गुगनराम सिहाग व अन्य पूर्वजों की स्मृति में प्रति वर्ष हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए हिन्दी भाषा के विद्वानों को सम्मानित करती है। सोसायटी के पास अहिन्दी भाषी राज्य तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक आदि से प्रचुर मात्रा में हिन्दी की पुस्तकें आती हैं। जब मैं सोसायटी का सचिव होने के नाते उन सबसे टेलीफोन पर बात करता हूँ तो वे अच्छी हिन्दी बोलते हैं और उन्हें खुशी होती है)

सर्वप्रथम संविधान समिति में तमिल भाषी श्री गोपाल स्वामी आयंगर जी ने देश की राजभाषा हिन्दी को बनाने का प्रस्ताव रखा जिसे समिति के सभी सदस्यों ने एकमत स्वीकार किया। हमारे संविधान के भाग १७ अध्याय १ में राजभाषा (हिन्दी) के बारे में विस्तार से लिखा है।

अनुच्छेद ३४३

(१) संघ की राजभाषा :- संघ (भारत) की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(२) खंड (१) में किसी बात के होते हुए भी इस संविधान के प्रारम्भ से प्रद्रंह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :
परंतु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(३) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा-(क)

अंग्रेजी भाषा का या (ख) अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद ३४४

राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद् की समिति :-

(१) राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूचि में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जायेगी।

(२) आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को:-

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग, (ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बधनों, (ग) अनुच्छेद ३४८ में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, (घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंको के रूप, (ङ) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के सम्बन्ध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय के बारे में सिफारिश करे।

(३) खण्ड (२) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोकसेवाओं के संबंध में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक् ध्यान रखेगा।

(४) एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोकसभा के सदस्य होंगे और दस राज्यसभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोकसभा के सदस्यों और राज्यसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(५) समिति का यह कर्त्तव्य होगा कि वह खंड (१) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

(६) अनुच्छेद ३४३ में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (५) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस सम्पूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निर्देश दे सकेगा।[६]

अनुच्छेद ३५१ में हिन्दी के विकास के लिए निदेश-

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूचि में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द- भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।[७]

भाषाएं : आठवीं अनुसूचि (अनुच्छेद ३४४ (१) और ३५१
१-असमिया, २-बंगला, ३-बोडो, ४-डोगरी ५-गुजराती, ६-हिन्दी, ७-कन्नड़, ८-कश्मीरी, ९-कोंकणी, १०-मैथिली, ११-मलयालम, १२-मणिपुरी, १३-मराठी, १४-नेपाली, १५-उड़िया, १६-पंजाबी, १७-संस्कृत, १८-संथाली, १९-सिन्धी, २०-तमिल, २१-तेलगु, २२-उर्दू[८]

निष्कर्ष :-

देवनागरी लिपि की यह वैज्ञानिकता है कि जो देवनागरी में लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है, जो पढ़ा जाता है वहीं बोला जाता है। हिन्दी भाषा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा थी और आज भी है। हिन्दी भााषा के इसी महत्व को समझते हुए संविधान सभा ने हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया है।

संदर्भ :

१-संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम १९७६ की धारा-२ द्वारा (३-१-१९७७ से) 'प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य' शब्दों के स्थान पर प्रतिस्थापित।

२- संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम १९७६ की धारा-२ द्वारा (३-१-१९७७ से) 'राष्ट्र की एकता' शब्दों के स्थान पर प्रतिस्थापित।

३- भारत का संविधान : सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, वर्ष २००९, पेज नं० १

४-भारत का संविधान : ओरियन्ट पब्लिशिंग कम्पनी, इलाहाबाद, वर्ष २०११, पेज नं० ५

५-डॉ० (श्रीमती) आशामोहन:प्रयोजनमूलक हिन्दी, पेज ३

६-भारत का संविधान : सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, वर्ष २००९, पेज नं० १८८-१८९

७-भारत का संविधान : सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, वर्ष २००९, पेज नं० १९२

८-भारत का संविधान : ओरियन्ट पब्लिशिंग कम्पनी, इलाहाबाद, वर्ष २०११, पेज नं० २५५-२५६

अंधविश्वास के विरुद्ध एक योद्धा

मैसमेरिज्म केवल एक धोखा है

देवेन्द्र कुमार आर्य एडवोकेट,

आजकल जनता को 'मैसमेरिज्म' के भ्रमित जाल में फंसाकर तो कहीं ज्योतिषी चमत्कार जिससे ग्रामीण भाषा में कुछ लोग 'बूझा' का नाम देते हैं, इन तथाकथित चमत्कारी धूर्तों द्वारा दोनों हाथों से लूटा जाता है। जबकी वास्तविकता यह है कि 'मैसमेरिज्म' मात्र एक धोखा है, धोखे के सिवा कुछ नहीं है, लेकिन फिर भी अनपढ़ भोले-भाले या कम शिक्षित लोगों का तो कहना क्या ? अच्छे पढ़े-लिखे प्रबुद्धजन इसके शिकार हो जाते हैं।

बागपत क्षेत्र के प्रमुख आर्योपदेशक महाशय श्रीपाल आर्य के सुपुत्र देवेंद्र कुमार आर्य एडवोकेट इस संदर्भ में समाज को जागृत करने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों में जाकर बड़े-बड़े मंचों से कथित तांत्रिकों, ज्योतिषियों व बूझा देने वालों के विषय में बेबाक ढंग से प्रदर्शन कर जनता पर गहरी छाप छोड़ इन प्रपंचों का जोरदार खंडन करते हैं।

श्री देवेंद्र कुमार एडवोकेट बताते हैं कि वे एक आर्यसमाजी परिवार से हैं तथा युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों के घोर समर्थक हैं। स्वामीजी ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में इन सब ढकोसलों व पाखंडों का जोरदार खंडन किया है, उसी से प्रभावित हो कर उन्होंने भी जनता को जाग्रत करने का बीड़ा उठाया है।

श्री आर्य बताते हैं कि कुछ लोग जनता को ठगने के लिए एक मजमा लगाते हैं। उसमें एक युवक को जमीन पर काला कपड़ा ढक कर लिटा लेते हैं, फिर उस पर किसी दैवी शक्ति का आगमन बता कर उससे उपस्थित जन समुदाय से प्रश्न पूछने को कहते हैं, जिनका जमीन पर लेटा युवक उत्तर देता है। आम जनता प्रश्नों का उत्तर सुन इनकी चालों में फंस जाती है। ये लोग इसी दौरान कुछ 'करामाती ताबीज' भी इच्छित मनोकामना पूर्ण होने के लिए 50 रुपए से लेकर 100 और 200 रुपए तक बेच देते हैं। जबकि इन कथित करामाती ताबीजों में मिट्टी, राख के सिवा कुछ नहीं होता है। श्री आर्य स्पष्ट करते हैं कि जमीन पर जो युवक कपड़ा ओढ़े लेटा रहता है, वह प्रश्न पूछने वाले मजमाधारी व्यक्ति की सांकेतिक भाषा को समझता है। उसे अन्य कोई व्यक्ति नहीं समझ पाता है। उनके अपने (कोड वर्ड्स) सांकेतिक शब्दावली होती है। बस यही 'मैसमेरिज्म' है। भोले व्यक्ति इनकी कपोल कल्पित चालों में आ जाते हैं।

एडवोकेट देवेंद्र कुमार आर्य आगे कहते हैं कि आज कल देश के विभिन्न प्रान्तों एवं शहरों में अनेकानेक लोग खोई चीज को बता देना, कोई घर छोड़ कर चला गया व्यक्ति कब लौटेगा, व्यापार में लाभ या हानि, नौकरी, पदोन्नति, विवाह, संतान प्राप्ति अथवा अन्य समस्याओं का करामाती ताबीज देकर अथवा हस्त रेखा, मस्तक रेखा देखकर निराकरण करने का दावा करते हैं वे जनता को भ्रमित एवं मूर्ख बना मोटा धन कमाकर अपना कारोबार चला रहे हैं। श्री आर्य तर्क देते हैं कि यदि ये लोग इतने करामाती हैं तो प्रत्येक थाने में इतनी लंबी चौड़ी पुलिस फोर्स की आवश्यकता नहीं, बस हर थाने में एक करामाती इन ज्योतिषी महाराज की नियुक्ति कर दी जाए। घटना अथवा चोरी डकैती से पहले ही बता देगा तथा सब अपराधी पकड़े जाएंगे।

श्री आर्य आगे और स्पष्ट करते हैं कि कथित करामाती लोगों के पास जब कोई अपनी समस्या का निदान पूछने आता है तो वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसकी समस्या का अध्ययन कर लेता है तथा फिर जो उसकी समझ में आता है बोल देता है, शेष कुछ नही है। श्री आर्य दावा करते हैं कि जो व्यक्ति उनके कथन पर विश्वास न करता हो वह कभी भी उनके आवास पर आकर उनसे साक्षात् वार्ता कर अपनी जिज्ञासा शांत कर सकता है अथवा अपने यहाँ उत्सव आदि

कार्यक्रम पर पूर्वानुमति ले, आमंत्रण देकर बुला सकते हैं।

श्री आर्य ने इसका पूर्णरुपेण खंडन करने के लिए पूर्व में अपने सुपुत्र एवं वर्तमान में अपने निकटवर्ती एक आर्य परिवार के 10 वर्षीय बच्चे विशेष आर्य को ट्रेंड किया है जो नोट का नंबर, सन्, घड़ी का टाइम, नाम, ग्राम, पता, किसके कितने भाई, कितनी बहनें, किसके घर का दरवाजा किधर, के अलावा शादी के मुकदमे के, परीक्षा के, गड़े धन के, सट्टे के, जुए के, वर्तमान, भूत, भविष्य, पदोन्नति के, अवनति के किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न करें, बच्चा तुरंत बता देता है। जब वह बच्चे को कहते हैं– दायीं आंख से बायीं आँख मिलाओ और बायीं आंख से दायीं आँख मिलाओ, बच्चा चित हो जमीन पर गिर जाता है। ठीक उसी प्रकार काला कपड़ा उस पर डाल दिया जाता है और जो पूछते हैं बच्चा फटाफट जवाब देता है। प्रदर्शन के बाद इसका खंडन कर उपस्थित जनता को समझाया जाता है यह सब कैसे किया जाता है। श्री आर्य द्वारा प्रदर्शित यह कार्यक्रम कई बार आकाशवाणी दिल्ली से भी प्रकाशित हो चुका है। इसके अलावा श्री आर्य बताते हैं आर्य जगत् के अनेकानेक विद्वान उनकी इस कला की प्रशंसा कर चुके हैं। एक बार की घटना का अवश्य चर्चा करना चाहूंगा। पूज्य स्वामी ओमानंद जी (पूर्व नाम आचार्य भगवानदेव जी) एक बार आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान) में उत्सव के दौरान मंच पर मौजूद थे। जब उन्होंने उक्त प्रदर्शन देखा तो अवाक् रह गए तथा पूछा– आपने यह कहाँ से सीखा, जब उन्हें बताया कि स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारवें समुल्लास में धनासरी के ठग दूर देश को जाते हैं तथा एक को सिद्ध तथा एक को साधक बना लेते हैं। इस सब का वहाँ उल्लेख है तो पूज्य स्वामी ओमानन्द जी बड़े प्रभावित हुए और देवेन्द्र कुमर आर्य को पुरस्कृत किया।

विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक संस्थाओं से जुड़े वरिष्ठ अधिवक्ता देवेंद्र कुमार आर्य कहते हैं– समाज के शिक्षित व जागरुक जनों को आगे आकर इन आडम्बरों व पाखण्डों से आम जनता को बचाने के लिए अपना योगदान करना चाहिए।

सम्पर्क : **देवेन्द्र कुमार आर्य एडवोकेट,**
आर्य भवन, नई बस्ती, बागपत, उ.प्र.
दूरभाष : 9412100967

कहाँ सुरक्षित हैं बेटियाँ ?

शशि रानी मदान द्वारा मदान बुक डिपो, पटियाला चोक जींद

बेटी बचाओ अभियान के तहत लोगों को कह तो दिया कि बेटियाँ बचाओ। पर कहाँ है हमारी बेटियाँ सुरक्षित ? केवल उन्हें कोख में मरने से बचाने का नारा लगाकर हम लोग समझते हैं कि हमने उन बच्चियों को सुरक्षित कर दिया। पैदा होने के बाद कहाँ हैं वह सुरक्षित ? आज चाहे वे कितनी भी सफलता पा रही हैं, लेकिन सुरक्षित नहीं हैं। हम प्रतिदिन अखबारों में, टी.वी. पर देखते हैं कि आज उसका बलात्कार हुआ। कहाँ है सुरक्षित ?

जन्म से ही माँ बाप को एक सुरक्षा कवच बनाना पड़ता है। हर पल बच्ची की सुरक्षा की चिंता लगी रहती है। न वह खुल कर हंस सकती है न घूम सकती है, न अपनी छत, आंगन में खुलकर सांस ले सकती है। हर पल उन्हें एक बंधन में बंध कर रहना पड़ता है चाहे वह विवाहिता हो या अविवाहिता। हमारे देश की यह बड़ी विडम्बना है। मर्यादा में रहना एक लड़की या औरत को ही सिखाया जाता है। गलती चाहे पुरुष की हो लेकिन दोषारोपण एक औरत पर ही किया जाता है। कहाँ हैं बेटियाँ सुरक्षित ? क्या एक कैदी की तरह घर की जेल में जीवन जीने के लिए पैदा हों बेटियाँ ? अपनी हर इच्छा मार कर जीते जी मरकर जीवन जीने के लिए जन्म लें बेटियाँ ? कहाँ हैं वे बेटियाँ सुरक्षित, जिन को बचाने के लिए हम अभियान चला रहे हैं। कहा जाता है कि बेटियों को बेटों के बराबर अधिकार हैं। अधिकार तो बहुत दूर की बात है, आज समाज में, परिवार में वह सुरक्षित ही नहीं है।

बच्चियां तब तक सुरक्षित नहीं हैं जब तक देश के पुरुषों, युवाओं को मर्यादा, सभ्यता का पाठ नहीं पढ़ाया जाता। जब तक वे संस्कारों की वैल्यू नहीं समझते। जब हर युवा प्रत्येक लड़की को सम्मान की दृष्टि से देखेगा तभी सुरक्षित होंगी बेटियाँ। नहीं तो बेटी बचाओ अभियान अखबारों और बैनर तक ही सीमित होकर रह जायेगा।

स्वास्थ्य रक्षक आंवला

❑आयुर्वेद शिरोमणि डॉ. मनोहरदास अग्रावत, मनोहर आश्रम, उम्मेदपुरा, पो० तारापुर-४५८३३०, जावद-म०प्र०

आँवले में जीवनदायिनी शक्ति पाई जाती है। यह शक्तिवर्द्धक और स्वास्थ्यवर्द्धक है। यह शरीर की ऊष्मा को सुरक्षित रखता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है, बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है, दन्तपंक्तियों को उज्ज्वल चमक देता है। यह हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। यह मस्तिष्क के तन्तुओं में तरावट रखता है। इसमें एक विशेष गुण यह भी है कि गर्म करने अथवा सुखाने पर इसकी यह शक्ति नष्ट नहीं होती। प्रायः सभी फलों के खाद्योज गर्म करने अथवा सुखाने पर नष्ट हो जाते हैं, पर आँवले में कुछ ऐसे अम्ल तत्त्व होते हैं जो गर्म करने अथवा सुखाने पर उसके गुण को नष्ट नहीं होने देते।

आँवले की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सभी प्रकार के प्रकृति वाले व्यक्तियों की, सभी प्रकार के ज्वर, मूत्र कृच्छ, योनि दाह एवं अन्य अनेकानेक रोगों में रामबाण की तरह अचूक पाया गया है।

प्रसिद्ध यूनानी हकीम नफीजी महोदय ने आँवले के गुणों का वर्णन करते हुए बतलाया है कि-'आँवला रुक्ष एवं किंचित् शीतल गुण होने के कारण श्लेष्मा को शान्त करता है, रक्त को शुद्ध करने में सहायक होता है और रक्त को प्रकृतिस्थ बनाता है। संग्राही गुण के कारण हृदय को बलवान बनाता है और बुद्धि को पुष्ट और पवित्र करता है।'

आँवले के जल से प्रतिदिन स्नान करने से दाह, खुजली, जलन आदि विकार शांत होते हैं। नियमपूर्वक आँवला सेवन करने वालों को चर्मरोग नहीं होते और चर्म विकृति में सेवन करने से भी बहुत लाभ होता है।

कुछ प्रयोग : इसकी सेवन विधि भी सुगम है। मुरब्बा व अचार के रूप में इसका लोकप्रिय प्रयोग तो सर्वविदित है।

(१) भोजन के बाद नमक और काली मिर्च के साथ इसके कच्चे फल (हरा आँवला) का सेवन जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। क्षुधा को बढ़ाता है। रक्त को साफ रखता है और दाँतों को मोती की तरह चमकाता है व शरीर को निरोगता प्रदान करता है।

(२) आँवले की चटनी भी बनाई जाती है-धनिया, पुदीना के साथ खटाई के स्थान पर इसका प्रयोग गुणकारी होता है।

(३) भोजन के पश्चात् आँवले के सूखे टुकड़ों को सुपारी की तरह खाया जाता है। भोजन के साथ या बाद में इसके सेवन से परिपाक ठीक रहता है और मस्तिष्क में स्फूर्ति बनी रहती है।

(४) आँवले को आग में भूनकर नमक के साथ भर्ता बनाकर खाया जाता है। इससे हाजमा सुधरता है।

(५) आँवले का मुरब्बा चाँदी के बर्क के साथ खाने से ग्रीष्म ऋतु में शीतलता प्रदान करता है और शक्तिवर्द्धन करता है।

(६) आँवले का चूर्ण शहद के साथ खाना हृदयोद्वेग, मंदाग्नि और दुर्बलता में बहुत लाभदायक होता है।

(७) इसके पत्तों को पानी के साथ उबालकर कुल्ला करने से मुंह के छाले नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि इसके पत्तों में टेनिक एसिड का भाग पाया जाता है।

(८) इसके बीज के मगज को कूटकर गर्म पानी में उबालकर उस पानी से आँखें धोने से बहुत दिनों की दुःखी हुई आँखें अच्छी होती हैं।

(९) दही के साथ आँवले का सेवन करने से रक्त पित्त (नकसीर) में लाभ होता है।

(१०) आँवले के पत्तों को कपूर के साथ पानी में पीसकर सिर पर लेप करने से नकसीर का आना तत्काल बंद हो जाता है।

(११) सूखे आँवले, चित्रक की जड़, छोटी हर्र, पीपल और सेंधे नमक को समभाग में लेकर चूर्ण कर लें। इसके खाने से सब प्रकार के ज्वर (बुखार) दूर होते हैं।

(१२) लोह भस्म के साथ आँवले का सेवन करने से कामला, पाण्डु (पीलिया) और रक्त अल्पता (खून की कमी) के रोगों में लाभ होता है।

(१३) दस ग्राम आँवला रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातःकाल आँवलों को मसलकर छान लें। इस पानी में थोड़ी मिश्री और जीरे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें। तमाम पित्त रोगों की रामबाण औषधि है। इसका प्रयोग १५-२० दिन करना चाहिये।

(१४) **हृत्कम्प**-आँवला सूखा और मिश्री दोनों ५०-५० ग्राम लेकर बारीक कूट पीस छानकर सुरक्षित रख लें। प्रतिदिन छः ग्राम औषधि पानी के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में हृदय के सभी रोग दूर हो जाएंगे, अत्यन्त सस्ता परन्तु अनुपम योग है।

(१५) हरड़ा, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, काली मिर्च और पीपल सभी को समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें, प्रतिदिन ३-३ ग्राम दवा शहद के साथ चाटने से हर प्रकार की

खाँसी दूर हो जाती है।
(१६) कै (उल्टी) और श्वास पर-आँवले के रस में शहद और पीपल डाल कर देना चाहिये।
(१७) मस्तकशूल (सिरदर्द) पर प्रातःकाल आँवले का चूर्ण घी और शक्कर के साथ देना चाहिये।
(१८) मूर्छा पर आँवले के रस में घी डालकर पिलाना चाहिये।
(१९) खुजली पर आँवले की राख को खोपरे के तेल (नारियल के तेल) में मिलाकर शरीर पर लगाना चाहिये। इससे खुजली मिटती है।
(२०) रात के समय आँवले का चूर्ण दूध के साथ लेने से दस्त साफ होता है व बालों और नेत्रों को बल देता है।
(२१) आँवले के टुकड़े करके, रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल उसके जल से केशों को धोने से नेत्रों की ज्योति में वृद्धि होती है एवं केश काले और मुलायम बने रहते हैं।
(२२) सूखे आँवलों को पीसकर कपड़े से छानकर रखलें और नींबू के रस में मिलाकर मेंहदी की तरह बालों में (केशों) में लेप लगाते रहें। तीन चार दिन में बाल स्याह (काले) हो जाते हैं तथा चमकीले बाल बढ़ते हैं।

अंग्रेजी खिजाबों की भाँति यह लेप दिमाग को नुकसान नहीं पहुँचाता और आँखों को गर्मी नहीं पहुँचाता बल्कि नेत्र ज्योति, मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।
(२३) अतिसार (न रुकने वाले दस्त) पर सूखा आँवला १० ग्राम, छोटी हरड़ ५ ग्राम, दोनों को बारीक पीस कर एक-एक ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं पानी के साथ फंकाएँ। दस्त बंद करने के लिए अत्यन्त सरल और अचूक औषधि है।
(२४) आँवले के कोमल पत्तों को पीसकर मट्ठे (छाछ) के साथ देने से अजीर्ण और अतिसार में लाभ होता है। इसके सूखे फलों में गेलिक एसिड की मात्रा काफी रहती है। इस कारण यह रक्तातिसार (खूनी दस्त), अर्शरोग और रक्तपित्त (नकसीर) की बीमारियों में खासतौर से उपयोगी है।
(२५) आँवलों को भलीभांति पीसकर एक मिट्टी के बरतन में लेप कर दें। फिर उस बर्तन में छाछ (मट्ठा) भरकर उस छाछ को रोगी को पिलाने से बवासीर में लाभ होता है।
(२६) रक्तातिसार (खूनी दस्तों) पर-आँवले का रस शहद, घी और दूध के साथ देना चाहिए।
(२७) मूत्र कृच्छ या गर्मी पर आँवले के रस और गन्ने के रस को मिलाकर पिलाना चाहिये।
(२८) आँवले के २० ग्राम स्वरस में इलायची का चूर्ण भुरभुराकर पीने से मूत्रकृच्छ मिटता है।
(२९) आँवले का चूर्ण जल में मिलाकर पिलाने से और उसी जल की मूत्रेन्द्रिय में पिचकारी देने से सुजाक की जलन शांत होती है और धीरे-धीरे घाव भर कर पीप आना बंद हो जाता है।
(३०) आँवले को घोंटकर शक्कर मिलाकर पीने से मूत्र के साथ खून आना बंद हो जाता है।
(३१) प्रमेह पर-आँवले के रस या सूखे आँवले के काढ़े में लगभग दो ग्राम पिसी हल्दी और शहद डालकर देना चाहिए।
(३२) शहद और आँवले का रस समभाग लेकर पीने से 'प्रमेह' का शमन होता है।
(३३) आँवले का चूर्ण एक ग्राम, काले जीरे का चूर्ण एक ग्राम, मिश्री दो ग्राम, तीनों को मिलाकर फाँक लें और ऊपर से थोड़ा सा ठण्डा जल पी लें। शय्या मूत्र रोग (बिस्तर में पेशाब करने का रोग) नष्ट होता है।
(३४) आँवले सूखे, काला जीरा समभाग लेकर कपड़छन कर लें। प्रतिदिन प्रातः सायं तीन ग्राम औषधि शहद के साथ चटाएँ। इससे 'शय्या मूत्र' का रोग नष्ट हो जाता है।
(३५) बनारसी आँवले (उत्तम मोटा वाला) का मुरब्बा एक नग, प्रतिदिन पानी से अच्छी प्रकार धोकर चबा-चबाकर खाएँ। अपने गुणों में अद्‌भुत है। कैसा ही भयंकर स्वप्नदोष होता हो, कुछ दिन के सेवन से भाग जाता है।
आँवला रसायन है। वीर्य विकारों के अतिरिक्त यह हृदय, मस्तिष्क और नेत्र रोगों में भी अत्यन्त लाभदायक है।
(३६) आँवले के बीजों को पानी में एक साथ पीसकर उस पानी को छानकर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीने से श्वेतप्रदर में लाभ होता है।
(३७) सूखे आँवले ३ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम, यह एक खुराक है। दोनों को कूट पीसकर चूर्ण बना लें और प्रातः सायं दोनों समय जल के साथ सेवन कराएँ। यह प्रयोग 'प्रदरान्तक' है।
(३८) आँवले के रस में शक्कर और शहद मिलाकर पिलाने से योनिदाह (भग की जलन) में अत्यन्त लाभ होता है।
(३९) वीर्यवृद्धि के लिए-आँवले के रस को घी में मिलाकर देना चाहिए।
(४०) नवयौवन के लिए- आँवले का चूर्ण ५०० ग्राम लेकर इसमें इतना आँवले का रस डालें कि चूर्ण पूरी तरह गीला हो जाए। फिर इसे खरल में डालकर घोटें। जब रस घोटते-घोटते बिल्कुल सूख जाय तब फिर आँवले का रस डालकर तर कर लें और फिर घोटें। इस प्रकार इक्कीस बार ऐसा करें फिर औषध तैयार है।

इस चूर्ण का प्रयोग छः ग्राम से लेकर १० ग्राम तक ताजा गोदुग्ध (गाय का दूध) के साथ करें। इसके सेवन से वृद्धावस्था दूर होकर शरीर में नव यौवन पैदा होता है।
(४१) वृद्ध न होने के लिए-सूखे आँवले को पानी में पीस कर शरीर पर लगायें और थोड़ी देर पश्चात् स्नान कर लें। नित्य प्रति इस नियम का पालन करने से शरीर पर झुर्रियाँ नहीं पड़तीं और केश सफेद नहीं होते।

जानते हो?

❖ भारत में पहला डाक टिकट सन् १८५२ में छपा था।
❖ गरुड़ इंडोनेशिया का राष्ट्रीय पक्षी है।
❖ लंका शब्द का अर्थ चमकने वाली धरती है।
❖ डालफिन मछली सोते समय भी अपनी आंखें खुली रखती है।
❖ बिल्ली, शेर, चीता, बाघ की आंखें रात्रि को हीरे की तरह चमकती नजर आती हैं।
❖ १९३५ में एक वर्ष में पांच सूर्य ग्रहण और दो चंद्र ग्रहण लगे।
❖ सिकन्दर और जूलियस सीजर को मिर्गी के दौरे पड़ते थे।
❖ आधा किलो रुई से ३३०० कि० मी०लम्बा सूत काता जा सकता है।
❖ एक पेंसिल से ३५ मील लम्बी रेखा कागज पर खींची जा सकती है।
❖ अंगूठे का नाखून धीरे-धीरे बढ़ता है और बीच की उंगली का नाखून तेजी से बढ़ता है। ❒हर्षित योगी

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

❒आस्था गुड्डू

☺अमेरिकन- हमारे यहां शादी ई-मेल से भी होती है।
रामसिंह - भई कमाल है, हमारे यहां तो शादी सिर्फ फीमेल से होती है।

☺टीचर- अगर तुम एक जंगल में हो और वहां शेर आ जाए तो तुम क्या करोगे?
पप्पू- सर मैं पेड़ पर चढ़ जाऊंगा।
टीचर- अगर वह वहां भी आ जाए तो?
पप्पू- तो मैं पानी में कूद जाऊंगा।
टीचर- और अगर वह पानी में ही आ जाए तो?
पप्पू- मास्टर जी, पहले आप यह बताओ कि शेर क्या आपका रिश्तेदार है जो आप उसकी साइड लिए जा रहे हो।

☺अध्यापक : अकबर ने पहली लड़ाई किससे लड़ी?
छात्र : तलवार से, सर।

☺प्रिया : यदि तुम खाद्य मंत्री बन जाओ तो क्या करोगे?
रवि : मैं अपने मित्रों के घर खाद के बोरे मुफ्त भेज दूंगा।

☺वृद्ध पिता मृत्यु शैया पर पड़ा था। तीन नालायक बेटे पास बैठे खुसर पुसर कर रहे थे।
एक-एम्बुलैंस मंगालो।
दूसरा-नहीं बैलगाड़ी कर लेंगे।
तीसरा-अरे छोड़ो, कन्धे पर डालकर ले चलेंगे।
तभी पिता उठ खड़ा हुआ। सांस ठीक करता हुआ बोला-रहने दो बेटा, तुम मेरी चप्पल ला दो मैं खुद ही चला जाऊंगा।

बाल वाटिका

प्रहेलिका:

❍दिखने में फिटकरी सी
स्वाद में चखी तो शक्कर सी
बताओ मैं कौन सी श्री?

❍एक बहादुर कभी न डरता, सूचित करके हमला करता।

❍काली वर्दी धीमी चाल। चलता जैसे कोतवाल।।

❍गोल हूँ पर पहिया नहीं, चमकता हूँ पर पैसा नहीं,
ठण्डा हूँ पर बर्फ नहीं, बताओ मैं कौन हूँ?

❍कागज का मुर्गा मांजे की लगाम,
खींचा मुर्गा करे सलाम।

❍दो अक्षर का उसका नाम, गरदन लम्बी ऊँट समान,
सांपों को भी चट कर जाता,
फिर भी सबके मन को भाता।

❍पैदा होकर सबसे पहले, दामन उसका थामें।
एक वर्ण रामायण में है एक वर्ण गीता में

❍चार पांव खुर नही, दो हाथ हैं भाई,
आँख कान का पता नहीं, फिर भी करे भलाई

❍बरखा बरसी रात को सारा वन भिगोए।
घड़ा भरा ना जल से पंछी प्यासा जाए।

मिश्री, मच्छर, चींटी, चन्द्रमा, पतंग,
मोर, माता, कुरसी, ओस

विचार कणिका:

❒प्रतिभा

❑क्रोध मष्तिष्क के दीपक को बुझा देता है।
❑कोई हमें एक बार धोखा देता है तो यह उसकी गलती है, यदि दोबारा धोखा देता है तो यह हमारी गलती है।
❑आज का पुरुषार्थ ही कल का भविष्य बनने वाला है।
❑जो आदमी दूसरों की गलतियों को ढूंढता रहता है वह अपनी गलतियों का सुधार नहीं कर सकता। वह उस मक्खी की तरह होता है जो सारे सुन्दर शरीर को छोड़कर वहाँ बैठती है जहाँ घाव होता है।
❑संसार का सबसे अच्छा कार्य है अपने आप को अच्छा बना लेना।
❑अपनी भूल सुधार लेना ही अच्छे मनुष्य क लक्षण हैं।

प्रेरणा कथा

संकलन : सुमेधा

अंधानुकरण

नदी में हाथी की लाश बही जा रही थी। एक कौए ने लाश देखी तो प्रसन्न हो उठा, तुरंत उस पर आ बैठा। यथेष्ट मांस खाया। नदी का जल पिया। उस लाश पर इधर-उधर फुदकते हुए कौए ने परम तृप्ति की डकार ली। वह सोचने लगा, अहा! यह तो अत्यंत सुंदर यान है, यहाँ भोजन और जल की भी कमी नहीं। फिर इसे छोड़कर अन्यत्र क्यों भटकता फिरूं?

कौआ नदी के साथ बहने वाली उस लाश के ऊपर कई दिनों तक रमता रहा। भूख लगने पर वह लाश को नोचकर खा लेता, प्यास लगने पर नदी का पानी पी लेता। अगाध जलराशि, उसका तेज प्रवाह, किनारे पर दूर-दूर तक फैले प्रकृति के मनोहरी दृश्य-इन्हें देख-देखकर वह विभोर होता रहा। नदी एक दिन आखिर महासागर में मिली। वह मुदित थी कि उसे अपना गंतव्य प्राप्त हुआ। सागर से मिलना ही उसका चरम लक्ष्य था, किंतु उस दिन लक्ष्यहीन कौए की तो बड़ी दुर्गति हो गई। चार दिन की मौज-मस्ती ने उसे ऐसी जगह ला पटका था, जहां उसके लिए न भोजन था, न पेयजल और न ही कोई आश्रय। सब ओर सीमाहीन अनंत खारी जल-राशि तरंगायित हो रही थी।

कौआ थका-हारा और भूखा-प्यासा कुछ दिन तक तो चारों दिशाओं में पंख फटकारता रहा, अपनी छिछली और टेढ़ी-मेढ़ी उड़ानों से झूठा रौब फैलाता रहा, किंतु महासागर का ओर-छोर उसे कहीं नजर नहीं आया। आखिरकार थककर, दुख से कातर होकर वह सागर की उन्हीं गगनचुंबी लहरों में गिर गया। एक विशाल मगरमच्छ उसे निगल गया। शारीरिक सुख में लिप्त मनुष्यों की भी गति उसी कौए की तरह होती है, जो आहार और आश्रय को ही परम गति मानता है।

प्रस्तुति : यज्ञदत्त आर्य

जंग अपनों से

एक पत्नी ने अपने पति से आग्रह किया कि वह उसकी छह कमियाँ बताए जिन्हें सुधारने से वह बेहतर पत्नी बन जाए।

पति यह सुनकर हैरान रह गया और असमंजस की स्थिति में पड़ गया। उसने सोचा कि मैं बड़ी आसानी से उसे 6 ऐसी बातों की सूची थमा सकता हूँ , जिनमें सुधार की जरूरत थी और ईश्वर जानता है कि वह ऐसी 6 बातों की सूची मुझे थमा सकती थी, जिसमें मुझे सुधार की जरूरत थी। परंतु पति ने ऐसा नहीं किया और कहा - 'मुझे इस बारे में सोचने का समय दो, मैं तुम्हें सुबह इसका जबाव दे दूँगा।'

पति अगली सुबह जल्दी ऑफिस गया और फूल वाले को फोन करके उसने अपनी पत्नी के लिए छह गुलाबों का तोहफा भिजवाने के लिए कहा जिसके साथ यह चिट्ठी लगी हो- 'मुझे तुम्हारी छह कमियाँ नहीं मालूम, जिनमें सुधार की जरूरत है, पर तुम जैसी भी हो मुझे बहुत अच्छी लगती हो।'

उस शाम पति जब आफिस से लौटा तो देखा कि उसकी पत्नी दरवाजे पर खड़ी उसका इंतजार कर रही थी, उसकी आंखों में आँसू भरे हुए थे।

यह कहने की जरूरत नहीं कि उनके जीवन की मिठास कुछ और बढ़ गयी थी। पति इस बात पर बहुत खुश था कि पत्नी के आग्रह के बावजूद उसने उसकी छह कमियों की सूची नहीं दी थी। इसलिए यथासंभव जीवन में सराहना करने में कंजूसी न करें और आलोचना से बचकर रहने में ही समझदारी है।

जिन्दगी का ये हुनर भी, आजमाना चाहिए,
जंग गर अपनों से हो, तो हार जाना चाहिए।

शिवचरण डागर

बिना अकल के नकल

एक बार दो गधे अपनी पीठ पर बोझा उठाए चले जा रहे थे, उनको काफी लम्बा सफर तय करना था एक गधे की पीठ पर नमक की भारी बोरियां लदी हुई थीं तो एक की पीठ पर रूई की बोरियां लदी हुई थीं।

रास्ते में एक नदी थी, नदी के ऊपर कच्चा पुल बना हुआ था। जिस गधे की पीठ पर नमक की बोरियां थीं, उसका पैर फिसल गया और वह नदी के अंदर गिर पड़ा। नदी में गिरते ही नमक पानी में घुल गया और उसका वजन हल्का हो गया। वह यह बात बड़ी प्रसन्नता से दूसरे को बताने लगा।

दूसरे गधे ने सोचा कि यह तो बढ़िया युक्ति है, ऐसे में तो मैं भी अपना भार काफी कम कर सकता हूं और उसने बिना सोचे-समझे पानी में छलांग लगा दी, किन्तु रूई के पानी सोख लेने के कारण उसका भार कम होने की बजाय बहुत बढ़ गया, जिस कारण वह मूर्ख गधा पानी में डूब गया।

मनुष्य को सदा अपना विवेक जाग्रत रखना चाहिए, बिना अपनी बुद्धि लगाए दूसरों की नकल कर वैसा ही करने वाले सदा उपहास के पात्र बनते हैं।

मेल कैसे हो

माला तेरे हाथ में, मन है दाव घात में।
परमपिता के साथ में फिर मेल कैसे हो।।

परम दयालु और कृपालु जग का पालक न्यायकारी।
जग का पालक न्यायकारी।
माता पिता वो हर प्राणी का पुत्रवत् प्रजा सारी।
पुत्रवत् प्रजा सारी।
वह बसा हुआ हर गात में, तू फँसा रहा पक्षपात में।
परमपिता के साथ में फिर मेल कैसे हो।।१।।

गंगा यमुना मथुरा काशी वन पर्वत में है फिरता।
वन पर्वत में है फिरता।
जप तप तीर्थ व्रत करै गुरु चरणों में सिर धरता।
गुरु चरणों में सिर धरता।
करता हवन प्रभात में क्रोध करै हर बात में।
परमपिता के साथ में फिर मेल कैसे हो।।२।।

दीन दु:खी का मान करे ना निर्बल को धमकाता है।
निर्बल को धमकाता है।
वेदपाठ गायत्री जप ईश्वर को रिझाना चाहता है।
ईश्वर को रिझाना चाहता है।
रिश्वत खाता दरखास्त में बोले झूठ पंचायत में।
परमपिता के साथ में फिर मेल कैसे हो।।३।।

ऊपर से बना त्यागी तपस्वी मन में वासना बसी भोग की।
मन में वासना बसी भोग की।
हरद्वारीलाल कपड़े रंग लीन्हे दीक्षा गुरु से ले ली जोग की।
दीक्षा गुरु से ले ली जोग की।
योग की करामात में ठगता शहर देहात में।
परमपिता के साथ में फिर मेल कैसे हो।।४।।

ओम ओम बोल बंदे

ओम् ओम् बोल बन्दे ओम ओम बोल बन्दे।
कुछ ना लगता मोल तेरा ओम ओम बोल बन्दे।।

ओम नाम के जपने से भाई होगा पाप का नाश तेरा।
सभी तरह के सुख भोगेगा होगा स्वर्ग में वास तेरा।
आलस्य प्रमाद में फंस कर मत कर टाल मटोल बन्दे।।१।।

❒स्व० महात्मा हरिदेव जी
(महाशय हरद्वारी लाल आर्य)
संस्थापक गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर रोहतक

ईर्ष्या द्वेष हटा कर मन से सबसे प्यार करा कर तू।
छल कपट को छोड़ हमेशा सत्य व्यवहार करा कर तू।
लोभ और लालच छोड़ हमेशा ठीक नाप और तोल बन्दे।।२।।

तन मन धन सब अपना लगाकर पर उपकार कमाना तू।
शुभ कर्मों में दु:ख जो आए खुश हो सहते जाना तू।
मन को रखना थाम हमेशा ना हो डावांडोल बन्दे।।४।।

काम क्रोध मद लोभ छोड़कर सत्य में चित्त लगाना तू।
भक्ति करनी पर्वत चढ़ना जम-जम कदम बढ़ाना तू।
हरद्वारीलाल जो फिसल गया तो दुनिया करै मखोल बन्दे।।५।।

चढ़ा सितारा कर दे

मेरे भगवान शान भारत की, वही दुबारा कर दे।
सब मुल्कों का गुरु बने, वो ज्ञान हमारा कर दे।।

वेद शास्त्र पढ़ें सभी, करें कर्तव्य अपना याद।
सत्य असत्य निर्णय की खातिर, चलें सदा संवाद।
जगह जगह पर बनें आश्रम, स्वर्ग नजारा कर दे।
गौतम कपिल कणाद जैमिनी, योग द्वारा कर दे।।१।।

भ्राता होवें भरत जैसे, और लक्ष्मण जैसे जती।
पतिव्रता हों देवी घर घर, सीता जैसी सती।
योद्धा यति श्री रामचन्द्र, दशरथ का दुलारा कर दे।
स्वामी सेवक हनुमान, सुग्रीव सा प्यारा कर दे।।२।।

कोई रहे ना दु:खी देश में, कर दे दूर कंगाली।
दूध दही घी खाएं, छूटे माँस और मद्य की प्याली।
कृष्ण जैसे पाली और, गऊओं का लंगारा कर दे।
दही छाछ की भरी बरोली, घी का बारा कर दे।।३।।

सत्पुरुषों में सदा मान हो, युवक वृद्ध बाल का।
शुभ कर्मों में तन मन लागे धन हरद्वारीलाल का।
पच्चीस साल का ब्रह्मचारी हर घर में कुंवारा कर दे।
दयानन्द सा योगी भेज हमारा चढ़ा सितारा कर दे।।४।।

बीकानेर गंगायचा अहीर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया

गत 5 सितम्बर २०१५ को प्रो॰ धर्मवीर आर्य नम्बरदार गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी ने अपने निवास पर भगवान श्रीकृष्ण महाराज का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया। प्रातः ९ बजे आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय घासेड़ा व कन्या गुरुकुल जसात से वेदपाठी ब्रह्म चारियों व ब्रह्मचारिणीयों ने स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न कराया। महाशय धर्मपाल जी भजनोपदेशक ने बहुत ही सुन्दर तरीके से श्रीकृष्ण कथा का संगीतमय वाचन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य श्री विजयपाल जी का श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र पर उद्बोधन श्रोताओं के मन को छू गया। इस अवसर पर क्षेत्र की सभी आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी, भारी संख्या में ग्राम गगांयचा अहीर-बीकानेर व आसपास के गाँवों के लोगों के अतिरिक्त आर्यसमाज बीकानेर- गगांयचा अहीर के सभी सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित रहे। प्रसाद वितरण व बाहर से आये अतिथियों के भोजन के बाद समारोह सम्पन्न हुआ। (अशोक कुमार आर्य द्वारा)

गुरुकुल प्रभात आश्रम में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के १२१ वें जन्मदिवस के अवसर पर श्रावण शुक्ला एकादशी विक्रमी २०७२, तदनुसार २६ अगस्त २०१५, को संपन्न हुई गोष्ठी का विषय था- 'वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता।' गोष्ठी में समागत विद्वानों का प्रभाताश्रम की वैदिक परम्परानुसार शंखवादन, तिलक-चर्चन, श्रीफल एवं फलों की माला से स्वागत किया गया। गोष्ठी का शुभारंभ सरस्वती वन्दना एवं विद्वानों की स्वागत-गीतिका से हुआ। गोष्ठी के समुद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो॰ ओमप्रकाश पाण्डेय तथा संयोजक प्रो॰ सोमदेव शतांशु थे। समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के निर्देशक डॉ॰ मानसिंह जी ने अभ्यागतों का तथा पूज्य स्वामी अनन्तभारती जी ने अपने शोधपत्र के साथ सभी वाचकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। वैदिक अध्यात्म विज्ञान की सार्वभौमिकता का विशद विवेचन करते हुए गुरुकुल के कुलाधिपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने उसके प्रचार प्रसार पर बल दिया।

महर्षि पतञ्जलि के योगदर्शन, वेद एवं उपनिषद् आदि पर आधारित

सरल आध्यात्मिक शिविर

१३ से १७ नवम्बर २०१५

स्थान

गुरुकुल भैयापुर लाढौत

शिविराध्यक्ष

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (आर्य वन रोजड़)

शिविर आयोजक

वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास रोहतक (हरि॰)

❖शांत संतुष्ट निर्भीक रहने के लिए ❖बुद्धि को कुशाग्र और स्मृति को तीव्र बनाने के लिए ❖मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण कर एकाग्रता बढ़ाने के लिए❖ आत्मा के स्वरुप को जानने के लिए

आज ही पंजीकरण कराएँ

सम्पर्क सूत्र

093556 74547, 9466258105
09416874035, 097280 56161

वरिष्ठ नागरिक परिषद द्वारा आयोजित हुआ कवि सम्मेलन

(कार्यालय प्रतिनिधि)

वरिष्ठ नागरिक परिषद् जींद के तत्त्वावधान में स्थानीय डीआरडीए हॉल में गत ६ सितम्बर को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता वरिष्ठ नागरिक परिषद् की अध्यक्ष श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द आईएएस (सेवानिवृत्त) ने की। परिषद् के संरक्षक कर्नल एसएस ढांडा, महासचिव डॉ० ए० एस० डांगी, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल, उपाध्यक्ष सर्वश्री वी० के० शर्मा, ए० आर० चहल, करमचन्द, ओ० पी० मलिक, श्री बूटा सिंह पूनिया, श्रीमती सरोज कौशिक, श्री एस० एस० बैरागी, जिले सिंह श्योकन्द, श्री वीरेन्द्रसिंह लाठर व श्री रामकुमार मोर सहित सैंकड़ों सदस्यों व नागरिकों ने कवि सम्मेलन का आनन्द लिया। हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर कवि नरेन्द्र अत्री, हिन्दी व हरयाणवी के ओजस्वी रचनाकार ओमप्रकाश चौहान व शांतिधर्मी के सम्पादक सहदेव समर्पित ने अपनी विशिष्ट शैली से प्रबुद्ध श्रोताओं को मनोरंजन के साथ वैचारिक ऊर्जा से भर दिया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी बालमुकुन्द भोला ने अपने चुटीले अंदाज में सम्मेलन का सफल संचालन किया। हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था के अध्यक्ष प्रा० रामफल खटकड़ ने भी प्रेरक उद्बोधन किया। परिषद् की ओर से श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द ने सभी साहित्यकारों व अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कटनी के कलेक्ट्रेट हाल व 6 शिक्षण संस्थाओ में हुआ वेदों का उपदेश

7 से 9 सितम्बर तक आर्यसमाज कटनी (मध्य प्रदेश) पधारे आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी का कलेक्ट्रेट के विशाल कक्ष में उपदेश हुआ जिसमें कलेक्टर श्री विकास सिंह नरवाल, अपर कलेक्टर अमरपाल सिंह सहित करीब 12 शासकीय विभागों के अधिकारी व कर्मचारी सम्मिलित हुये। आचार्यश्री ने तनावमुक्त जीवन विषय पर अपने विचार रखे। अपना स्वास्थ्य, दिनचर्या, व्यवहार, ब्रह्मचर्य, आहार विहार, शुद्ध सात्विक आय, व्यायाम, प्राणायाम, ईश्वर भक्ति; इन सबका आपस में गहरा ताल्लुक है, एक का अन्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। हमारे द्वारा जो कुछ भी अच्छा बुरा कर्म किया जाता है, उसका फल कभी न कभी हमें ही भोगना पड़ता है। कटनी के 6 प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों में आचार्यश्री का उपदेश हुआ जिनमे सैंकड़ों छात्र छात्राये सम्मिलित हुये। प्राचार्यगण व प्राध्यापकों ने पूरा सहयोग दिया। बच्चों का उत्साह हर्षदायक था, निर्धारित समय पूरा होने के उपरान्त भी वे आगे सुनना चाहते थे। कटनी में यह नया प्रयोग अत्यंत सफल रहने से भविष्य में वार्षिकोत्सव के दौरान आर्य विद्वानों को अन्य संस्थाओं में भी उपदेशार्थ ले जाने का संकल्प लिया गया। समस्त आयोजन में प्रधान श्री अश्विनी सहगल एवं समस्त आर्य सज्जनों का सहयोग रहा। –**आर्य योगेश मिश्र**, मंत्री, आर्यसमाज सिविल लाइन्स, कटनी (मध्यप्रदेश)

यज्ञ समिति झज्जर ने किया समारोह

समिति द्वारा १३ सितम्बर को भट्टी गेट में यज्ञ भजन सत्संग का कार्यक्रम आचार्य बालेश्वर के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। यजमान का आसन राव रतीराम आर्य व श्रीमती मामकौर देवी ने ग्रहण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री रमेशचन्द्र कौशिक ने कहा कि बेटियाँ परिवार की आन बान और शान होती हैं। आचार्य बालेश्वर जी ने कहा कि जैसे नदियों का पानी किनारे की गंदगी को बहाकर ले जाता है उसी प्रकार यज्ञ से सब प्रकार के प्रदूषण दूर होते हैं। मुख्य वक्ता श्री आजादसिंह दूहन ने बच्चों को संस्कारवान बनाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में पं० जयभगवान, प्रदीप शास्त्री, लाला प्रकाशवीर, जयप्रकाश राठी, विवेक गोयल,मा० द्वारकादास, रमेश सैनी आदि उपस्थित थे।

आ० प्र० सभा हिमाचल प्रदेश के प्रतिनिधि मण्डल की

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत से भेंट

रामफलसिंह आर्य द्वारा

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के पदाधिकारियों ने गत २८ अगस्त को हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी से राजभवन शिमला में भेंट की और उन्हें इस गौरवमय पद पर आसीन होने के लिए बधाई दी। राज्यपाल इस प्रतिनिधिमण्डल से अत्यंत आत्मीयता से मिले और उत्सुकतापूर्वक आर्यसमाज से संबंधित कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने सभा के कार्यों के लिए पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक ज्ञापन के माध्यम से अपनी मांगें आचार्य जी के समक्ष रखीं जिन पर उन्होंने गंभीरतापूर्वक विचार करने का वचन दिया। प्रमुख मांगें–

१– हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में ३ वर्ष पूर्व स्थापित स्वामी दयानन्द शोध पीठ का नाम बदल कर महर्षि दयानन्द शोधपीठ किया जाए और इसमें ठोस कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ किया जाए।

२–महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर प्रदेश में राजकीय अवकाश घोषित किया जाए।

३–महाविद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों में दीक्षान्त समारोहों में काला चोगा और टोपी की प्रथा को बंद किया जाए क्योंकि काला रंग अज्ञान का प्रतीक है और यह अंग्रेजों द्वारा चलाई गई कुप्रथा का अंधानुकरण मात्र है।

४– प्रदेश में पर्याप्त संख्या में चल रहे संस्कृत महाविद्यालयों के ऊपर एक संस्कृत विश्व विद्यालय स्थापित किया जाए और उसका नाम महर्षि दयानन्द जी के नाम पर रखा जाए।

प्रतिनिधि मण्डल में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रबोध चन्द्र सूद, उपप्रधान श्री सत्यपाल भटनागर, महामंत्री श्री रामफलसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलदेवसिंह रंगा, संचालक आर्य वीर दल श्री श्रवणकुमार आर्य, अंतरंग सदस्य सर्वश्री सत्यपाल आर्य, राजेन्द्र सूद, दर्शनलाल, प्रेमसिंह गौड़, प्रेमचन्द, संजीव कुमार व श्रीमती सुमन सूद सम्मिलित थे।

कर्मफल पृष्ठ १३ का शेष

कभी नहीं विचारता कि इसे कोई ऐसी शक्तिमान् देख रहा है, जान रहा है जो कि परम शक्तिशाली, परम न्यायकारी और सर्वव्यापक है। यद्यपि पाप कर्म करते समय उस दयालु जगदीश्वर की ओर से चेतावनी भी दी जाती है। मन में उस समय भय, शंका और लज्जा की अनुभूति वह करा देता है। यह सत्य में ईश्वरीय वाणी ही होती है परन्तु जो उस वाणी, उस चेतावनी को सुनकर भी अनसुना कर देता है और न करने योग्य कर्म कर डालता है, उपनिषद् या वेद के शब्दों में उसे ही आत्महन्ता कहा जाता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र होने के कारण ही ऐसा करता है।

असूर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना।। (ईशो० 1/3)

आत्मा तो वास्तव में अभौतिक होने से हनन करने योग्य नहीं है, उसका हनन नहीं किया जा सकता। यहाँ पर आत्मा का हनन करने से अभिप्राय: है कि उसको उसकी महिमा से गिरा देना, परमात्मा की प्रेरणा के विरुद्ध कार्य करना। ऐसा जिसने किया है वह तो अन्धकार में गिरेगा ही, दु:ख भोगेगा ही। जो व्यक्ति बुरे कर्म करने के उपरान्त अच्छे फल की कामना करता हैं उन्हीं के लिये किसी कवि ने कहा है कि 'बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ से पाये' उसे तो बबूल के कांटे ही मिलेंगे।

यह कितनी दूषित सोच है कि व्यक्ति झूठ बोलते समय, धोखा देते समय, चोरी करते समय, चुगली-निन्दा करते समय, हिंसा करते समय, बलात्कार करते समय, रिश्वत लेते समय, किसी की बहू-बेटी की ओर कुदृष्टि डालते समय, पराये धन पर ललचाते समय तो स्वयं को बड़ा चालाक, स्मार्ट और बुद्धिमान् समझता है और जब दु:ख रूप में इन कर्मों का फल प्राप्त होता है तो ईश्वर को भला बुरा कहता है या उसे याद करता है। वह उल्टा कार्य कर रहा होता है अर्थात् जब ईश्वर की बात मानकर उसे स्मरण करना चाहिये था, उस समय तो किया नहीं और जब स्वयं के कर्म देखने चाहियें, तब भगवान को याद कर रहा है। इससे कोई लाभ होने वाला नहीं है। न भगवान ऐसी किसी विनती को मानने वाला है। वह सर्वज्ञ है अत: उसे मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। उसका स्वभाव ही न्याय करना है, वह इसके विपरीत कभी जा ही नहीं सकता। तभी तो उसने मनुष्य को दण्ड देने से पहले बुद्धि दी है। आँख खोल कर चल, विचार कर चल, पीछे पछताना मत।

कितना घोर आश्चर्य है कि हम पाप से नहीं डरते किन्तु पाप के फल (दु:ख) से डरते हैं। किसी संस्कृत के कवि ने क्या सुन्दर कहा है-

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवा:।
फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति मानवा:।।

अर्थात् मनुष्य पुण्यकर्मों के फलों को तो बहुत चाहता है पर पुण्य कर्म करने के लिये उत्सुक नहीं रहता। पापकर्मों के फलों को कभी नहीं चाहता पर पापकर्म करने के लिये सदा उद्यत रहता है। वास्तव में आज मनुष्य की यही वृत्ति बन गई है। पाप कर्म करना तो छोड़ा नहीं, उसके फल से बचने के उपाय ढूंढने में पूरी शक्ति लगा दी। कहीं ज्योतिषियों के चक्कर में, कहीं बाबाओं के चक्कर में, कहीं तान्त्रिकों के और कहीं निरर्थक ऊट पटांग क्रियाओं में। एक तो बुरा कर्म किया, ऊपर से उसे छुपाया और फल से बचने के लिये और भी मूर्खतापूर्ण कृत्य कर डाले। इधर रिश्वत के पैसे डकारे, उधर दान दे रहा है। कहीं जगराते करवा रहा है, कहीं माथा रगड़ रहा है। इससे क्या होना है? माथा रगड़ने की अपेक्षा माथे से ठीक कार्य लिया होता तो फिर दु:ख होता ही नहीं। पर इसे करे कौन? इसमें तो पुरुषार्थ करना पड़ता है। धार्मिक बनने की अपेक्षा इसने धार्मिक दिखना पसन्द किया। फल, दु:ख रूप में मिला।

यह अटल बात है कि किये हुए कर्म का फल अवश्य ही मिलेगा। संसार की कोई शक्ति उससे बचा नहीं सकती, चाहे कितना समय व्यतीत हो जाये, कितना ही प्रायश्चित कर लें, दान कर लें, पूजा पाठ करवा लें, कर्म यदि कभी क्षीण होगा तो फल भुगतने के उपरान्त ही होगा। यदि ईश्वर का यह न्याय का नियम न हो तो महा-अन्धेर मच जाये। इसलिये आओ! पाप कर्मों को त्याग कर पुण्य का ही सेवन करें कि जिससे यह जन्म भी सुखपूर्वक बीते और आगामी जन्म भी सुधरे।

घर बैठे संस्कृताध्ययन का सुअवसर

आप सभी को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि माता करुणा शास्त्री संस्कृत ज्ञान विज्ञान केन्द्र, हिसार में उच्चारण शुद्धि (संस्कृत, हिन्दी) सामान्य संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण एवं अन्य आर्ष साहित्य (दर्शन, उपनिषद् आदि) का अध्यापन इण्टरनेट या दूरभाष के माध्यम से कराया जा रहा है। अध्ययन के इच्छुक सज्जन निम्नलिखित दूरभाष संख्या पर सम्पर्क करें।

आचार्य सत्यवान् आर्य, व्याकरणाचार्य
दूरभाष: ९४६७२४८७७७

श्रीकृष्ण– पृष्ठ १५ का शेष

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।

वह सब ओर हाथ–पैर वाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुखवाला तथा सब ओर कान वाला है, क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है। स्पष्ट है ईश्वर सभी में व्याप्त है। हम इस पर बड़े–बड़े उपदेश दे सकते हैं, प्रवचन देते हैं, आलेख लिखते हैं किन्तु इसे स्वयं ही नहीं मानते। यदि हम इसे माने तो दुनिया से लड़ाई–झगड़ा स्वयं मिट जायेगा। यदि हम ईश्वर पर विश्वास करेंगे तो उसकी सर्वव्यापकता को भी मानेंगे। असत्य, भ्रष्टाचार, कदाचार, चोरी, हिंसा जैसे कुकर्मों में लिप्त नहीं होंगे। कोई हमारे लिए दुश्मन नहीं रहेगा। तब हम गीता के इस श्लोक का अनुशीलन करने में समर्थ हो सकेंगे।

सुखदुखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

जय–पराजय, लाभ–हानि और सुख–दुख को समान समझकर, उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा; इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा। यहाँ अर्जुन के सन्दर्भ में भले ही युद्ध की बात की गयी हो किन्तु युद्ध का आशय सदैव हथियारों से युद्ध करना ही नहीं होता। जीवन–रण में विचार व आचरण से भी युद्ध लड़ा जाता है। समाज हित में अपनों से ही युद्ध करना पड़ता है। भ्रष्टाचार व आतंक आज की गंभीरतम समस्याएँ हैं। आज हमें इनसे कदम–कदम पर युद्ध करने की आवश्यकता है। अपने आप से युद्ध करने की आवश्यकता है, अपने व अपने परिवार के स्वार्थ से युद्ध करने की आवश्यकता है, अपने ही अधिकारियों के कुकृत्यों से युद्ध करने की आवश्यकता है और यह युद्ध एक–दो दिन का नहीं, आजीवन चलने वाला है। फल में आसक्ति का त्याग करके कर्म करने की आवश्यकता है और इसकी प्रेरणा गीता के अनुशीलन से ही मिलेगी।

आधुनिक प्रबंधशास्त्री कार्यस्थल के तनावों को घर, व घर के तनावों को कार्यस्थल पर न लाने की सलाह देते हैं। जबकि श्रीकृष्ण इस बात को कितने समय पूर्व कह गये थे। यह बड़ा ही सरल हो जायेगा यदि हम गीता के निम्नलिखित श्लोक को अपने आचरण में उतार सकें।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो। इस श्लोक में यह नहीं कहा गया है कि कर्म का फल नहीं मिलेगा। कर्म का फल तो प्रकृति व विज्ञान के नियमों के अनुसार अवश्य ही मिलेगा, क्योंकि जहाँ कारण होगा कार्य भी होगा। हमें करना केवल इतना है कि परिणाम या फल के प्रति आसक्ति का त्याग करना है। हमको धन का त्याग नहीं करना है, ध ान के प्रति आसक्ति का त्याग करना है। घर–बार छोड़कर जंगलों में नहीं जाना है, केवल आसक्ति को त्याग कर सभी के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना है। अध्यात्म में कंचन और कामिनी को छोड़ने की बात की जाती है। वस्तुतः न तो कंचन को छोड़ने की आवश्यकता है और न ही कामिनी को, इन दोनों के बिना सृष्टि व्यवस्था आगे नहीं बढ़ सकती और कोई भी नियम धर्म का अंग नहीं हो सकता जो प्रकृति के नित्य क्रम को ही बाधित करे। वस्तुतः कंचन और कामिनी को नहीं, इनके प्रति आसक्ति को त्यागना है। कर्म को नहीं त्यागना, फल को भी नहीं त्यागना, फल की आसक्ति को त्यागना है। अग्रलिखित श्लोक में भी कर्म करने का आग्रह किया ही गया है। हमें अपने कर्तव्यों का निर्वहन परिणामों की आकांक्षा किए बिना करना है। आधुनिक प्रबंध विज्ञान के समस्त तरीके भी प्रबंधशास्त्री श्रीकृष्ण द्वारा प्रस्तुत इसी आधार पर स्पष्ट किये जा सकते हैं। कार्य प्रबंधन, तनाव प्रबंधन व जीवन प्रबंधन गीता के द्वारा किया जा सकता है।

एतान्यपि तु कर्माणि संग त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्।।

इन यज्ञ, दान और तपरूप कर्मों को तथा और भी सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को आसक्ति और फलों का त्याग करके अवश्य करना चाहिए; यह मेरा निश्चित उत्तम मत है।

श्रीकृष्ण को ईश्वर व गीता को केवल पाठ करने की एक पुस्तक मानकर हम अपने आप को कृष्ण और गीता से दूर कर लेते हैं। हम कृष्ण को एक विचारक व प्रबंधशास्त्री के रूप में देखकर विचार करें, उनके दृष्टिकोण को समझने व गीता को एक व्यावहारिक ग्रन्थ मानकर अपने जीवन में ढालने के प्रयास करें तो व्यक्ति व समष्टि सभी को शान्ति व आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।

गीता धार्मिक पुस्तक मात्र नहीं है, वह कालजयी प्रबंधन ग्रन्थ है जिसकी उपादेयता आचरण में ढालने पर ही सिद्ध हो सकती है। श्रीकृष्ण द्वारा प्रस्तुत प्रबंधन के सूत्रों से हमारा मार्ग सरल, सुविधाजनक व सफल हो सकता है। आओ हम श्रीकृष्ण के प्रबंधशास्त्री के रूप को पहचानें और उनके प्रबंधन कौशल को समझते हुए उसे अपने जीवन प्रबंधन में आत्मसात् करने का प्रयत्न करें।

santoshgaurrashtrapremi@gmail.com

अन्ततः

सज्जनता ही देश की शक्ति है

❐सुन्दर सिंह धर्मखेड़ी, प्रवक्ता सतरौल खाप (9416514218)

भारत के उज्ज्वल भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी यहाँ की सज्जन-शक्ति ही है। यह शक्ति जितने ज्यादा मनोवेग से भारत के पुनर्निर्माण में लगेगी, उतनी ही जल्दी भारत निर्माण संभव है। जब तक संगठन निर्णायक हस्तक्षेप करने की स्थिति में न आ जाए तब तक कार्यकर्त्ता जन जागरण के कार्यों में जुटें। समाज या व्यवस्था को बदलने का काम विचार की शक्ति से संभव होता है। विचार जब आचार बनता है तो समाज में हलचल पैदा होती है। किसी सिद्धान्त विचार या दर्शन को जब कोई व्यक्ति आत्मसात् करना चाहता है तो उसे अपने लिए कुछ नियम बनाने पड़ते हैं। इन नियमों का अभ्यास होने पर आदत बनती है और आदतों से ही व्यक्तित्त्व का निर्माण होता है। समाज में कोई भी सकारात्मक परिवर्तन लोगों की संकल्पशक्ति और कर्मठता के बिना संभव नहीं है। सत्य के समर्थन में समाज को एकत्र करना जरूरी है। संसार की सभी शक्तियाँ भागने वालों के पीछे दौड़ा करती हैं और जो खड्ग लेकर डट जाता है उसके आगे सिर झुका दिया करती हैं।

राष्ट्र के गीत गाने से राष्ट्र रक्षित नहीं होगा, बल्कि उपाय करने से होगा। श्रीकृष्ण ने कहा है 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' तुम्हारे हाथ में पुरुषार्थ है, अतः उससे पीछे न हटो। वेद कहता है- 'वयम् स्याम् पतयो रयीणाम्' हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी बनें। हे भगवान्! मैं कभी दीन हीन न रहूँ। दीन हीन को सुख व सम्मान नहीं मिलता। साथ ही धन हमारे अहंकार का कारण न बने, अतः वेद यह भी कहता है कि 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' त्यागभाव से धन का प्रयोग करो। जो वेद विरुद्ध धन का प्रयोग करते हैं, वे दुःखी होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि अन्यायी चाहे चक्रवर्ती सम्राट् भी क्यों न हो, उससे डरना नहीं चाहिए किन्तु धार्मिक व चरित्रवान् व्यक्ति चाहे निर्बल ही क्यों न हो, उसका सम्मान करना चाहिए। दया की शिक्षा देने का अधिकारी वह है जो स्वयं दया का अधिकारी न हो। ऐसे ही प्रेम और सहयोग- ये यज्ञ के दूसरे नाम हैं। ये अहिंसक हथियार उसी वीर के हाथ में शोभा देते हैं, जिसे अपनी हिंसा का भय न हो। मनुष्य शक्त होकर सहन कर जाए, यह बल की पराकाष्ठा है। निर्बलता का एक रूप भय है तो दूसरा क्रोध। डूबने वाला और तैरने वाला दोनों पानी में एक जैसी क्रियाएँ करते हैं। फिर भी एक डूब जाता है और एक तैरता है। जिसको डूबने का भय है वही डूबता है, जिसको भय नहीं, वह नहीं डूबता।

बड़े बाप का बेटा होने में गर्व होता है, तब तो हमें भी गर्व होना चाहिए। जिस दिन हम प्रभु की पात्रता के अधिकारी होंगे, फिर तो विश्व का ऐश्वर्य हमारा ही है। जहाँ जीवन जीने के लिए प्रभु को आधार बना लिया जाता है वहाँ मृत्यु का क्या भय? हम मन से जुड़े रहते हैं तो दुःख का कारण बनता है और जब हम आत्मा के स्तर पर जीने लगते हैं तो सुख का कारण बन जाता है। चरित्रवान् का अल्पतम ज्ञान भी बहुत है और चरित्रहीन का बहुत ज्ञान भी निष्फल है। जब भीतर से दृष्टिकोण साफ सुथरा होगा तभी बाहर से अर्जित ज्ञान आचरण में उतर सकेगा। ज्ञान जब सही तरीके से आचरण में उतरेगा तभी हम उस ईश्वर को खोज पायेंगे, जिसकी तलाश ही ज्ञान का लक्ष्य है। सत्य को किसी आडम्बर की आवश्यकता नहीं होती जबकि असत्य को आडम्बर कदम कदम पर चाहिए। महर्षि दयानन्द व्यवहारभानु में लिखते है-जो मनुष्य धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक ठीक वर्त्तता है, उसको सर्वत्र सुखलाभ और जो विपरीत वर्त्तता है वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है। जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब इसके विपरीत होता है।

संसार में हर मनुष्य अपना जीवन संवरने का अवसर पाता है, अब यह उस पर निर्भर है कि वह उस अवसर को पहचान पाता है या नहीं। मनुष्य के पास बुद्धि एक ऐसी चीज है जो अवसरों को दास बना सकती है। बुराई के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं परन्तु भलाई का अवसर एकाध बार ही आता है। दूसरों की भलाई करना, सब के लिए अच्छा सोचना बुद्धिमान लोगों का व्यवहार होता है। वैभव वही है जिसे प्राप्त करके अहंकार न हो। बल वही है, जिससे अत्याचार न हो और आस्तिकता वही है जिसमें आडम्बर न हो। इस प्रकार के धन, बल, चरित्र, निर्भयता और पुरुषार्थ के वैभव से सम्पन्नता का अर्थ ही सज्जनता है। सज्जन होने का अर्थ दीन हीन होना नहीं है और यही सज्जनता देश की शक्ति है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

पर्यावरण दिवस पर वन विभाग द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पर रही स्मृति मलिक (बायें) साथ में इण्डस पब्लिक स्कूल के अन्य पुरस्कृत बच्चे।

शांतिधर्मी एवं गुगनराम सोसायटी (रज़ि) की एक ओर प्रस्तुति

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबन्ध, प्रौद्योगिकी, विधि की द्विभाषीय षण्मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

पत्रिका वर्ष में जून व दिसम्बर माह में प्रकाशित होगी। पत्रिका में अपने शोध पत्र प्रकाशन तिथि से एक माह पहले निम्न पतों पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

नरेश सिहाग एडवोकेट

चै. नं. 175, जिला न्यायालय,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

मो. 09466532152

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

Email ID :

grsbohal@gmail.com

Facebook :

bohalshodhmanjusha

उप कार्यालय :

सहदेव शास्त्री

शिवपुरी, नरवाना रोड़,

जीन्द-126102 (हरियाणा)

मो. 09416253826

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

- ☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- ☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- ☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- ☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 10.00 वार्षिक : 100.00 आजीवन : 1000.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826